प्रेरणा स्रोत
स्व. श्री यशवंतजी घोड़ावत

RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ.. सच

माही की गूंज

Www.mahikigunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com

वर्ष-02, अंक - 48 (साप्ताहिक) खवासा, गुरुवार 03 सितम्बर 2020 पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

सुविचार

अपनी खुशी को भविष्य की किसी सही तारीख के लिए स्थगित मत करो। अभी खुश रहें। कल अपने आप ही बन जाएगा। श्रीश्री रविशंकर

जम्मू-कश्मीर के लिए राजभाषा बिल लाने की मंजूरी, मिशन कर्मयोगी योजना को हरी झंडी

नई दिल्ली एजेन्सी। बुधवार को कैबिनेट की एक महत्वपूर्ण बैठक हुई इसमें कई बड़े फैसले लिए गए, बताया जा रहा है कि, जम्मू-कश्मीर के लिए राजभाषा बिल लाने को भी मंजूरी दी गई है, साथ ही कर्मयोगी योजना को भी सरकार ने मंजूरी दे दी है।

मोदी कैबिनेट ने जम्मू-कश्मीर राजभाषा बिल को मंजूरी देते हुए कहा कि, इसका फैसला राज्य की जनता की मांग पर किया गया है। इस बावत जानकारी देते हुए केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने बताया कि, कैबिनेट ने संसद में जम्मू-कश्मीर आधिकारिक भाषा विधेयक 2020 को लाने के प्रस्ताव को मंजूरी दी है।

उर्दू, कश्मीर, डोगरा, हिंदी और अंग्रेजी राज्य की आधिकारिक भाषा होंगी

इसमें उर्दू, कश्मीर, डोगरा, हिंदी और अंग्रेजी राज्य की आधिकारिक भाषा होंगी। केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्रसिंह ने कहा कि, जम्मू और कश्मीर में डोगरी, हिंदी और कश्मीरी को आधिकारिक भाषाओं के रूप में शामिल करना न केवल लंबे समय से लंबित सार्वजनिक मांग की पूर्ति है, बल्कि 5 अगस्त, 2019 के बाद समानता की भावना को ध्यान में रखते हुए ऐसा किया गया।

सुशांत सिंह राजपूत डेथ केस एनसीबी की जांच रिया चक्रवर्ती के करीब पहुंची,

मुंबई एजेन्सी। बॉलीवुड अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत से जुडे ड्रग्स मामले में नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) ने दो ड्रग्स पैडलर्स से पूछताछ की है, जिसके बाद कुछ और बड़े नामों के सामने आने की उम्मीद है। इस मामले के सबसे बड़े आरोपी को हालांकि अब तक नहीं पकड़ा जा सका है। मंगलवार को गिरफ्तार किए गए दोनों ड्रग पैडलर्स में से एक की पहचान बासित परिहार तथा दूसरे की जैद के रूप में की गई है। जैद ने माना है कि, उसके संबंध सुशांत की महिला मित्र रिया चक्रवर्ती के भाई शैविक चक्रवर्ती से हैं।

यह सब उस दौरान सामने आ रहा है, जब केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) सुशांत आत्महत्या मामले के केंद्र में रही रिया चक्रवर्ती, सैमुअल मिरांडा और अन्य से पूछताछ कर रही है। सुशांत के पिता केके सिंह ने गत माह एक वीडियों में आरोप लगाया था कि, रिया मेरे बेटे को लंबे समय से जहर दे रही थी। वह मेरे बेटे की हत्यारिन है। जांच एजेंसी को रिया तथा उसके सहयोगियों को अविलंब गिरफ्तार करना चाहिए। एनसीबी ने दोनों गिरफ्तार ड्रग तस्करों के पास से साढ़े तीन किलो गांजा भी बरामद किया था। सुशांत की मौत के सनसनीखेज मामले की मुख्य आरोपीत रिया की संलिप्तता की भी जांच कर रही है। रिया के चैट लीक होने और प्रवर्तन निदेशालय की ओर से सीबीआई को सबूत दिये जाने के बाद रिया पर संकट के बादल मंडराने लगे हैं।

गूंज अपील: शादी के नाम पर ठगी करने वालों से रहे सावधान

ठगी करने वाले शादी जैसे पावन संस्कार को भी आय का जरिया बनाकर कर रहे कलंकित

ठगी के इस खेल में ठगोरे हत्या तक को दे रहे अंजाम

माही की गूंज, झाबुआ।

हमारी भारतीय संस्कृति में सोलह संस्कारों को महत्व दिया गया है, उन सोलह संस्कारों में से एक महत्वपूर्ण संस्कार परिणय सूत्र में बंधने का संस्कार होता है। लेकिन जहां हर किसी क्षेत्र में ठगने वालों की कमी नहीं है उसी तरह फिल्मों की तरह नकली मां-बाप, भाई-बहन, बेटी का पात्र बन-बन कर ठगोरे शादी जैसे पवित्र संस्कार का फर्जी व जालसाजी के साथ निर्वाहन कर भोले-भाले एवं जरूरतमंद लोगों के इमोशन का फायदा उठाकर, गरीबी के नाम से, सहयोग के नाम से, मकान बनाने के नाम से, घर में फिल्मी पात्र सदस्य एवं बुजुर्गों को बीमार बताकर, या सहायता करने के नाम पर बड़ी राशि ले-लेकर ठगोरे ठगी की घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं।

पिछले दिनों बागीदौरा (राज.) का एक युवक की शादी इंदौर की एक ठगोरी दुल्हन से हुई थी, और शादी के 2 दिन बाद ही फिल्मों की तरह पात्र रिश्तेदार बन ठगोरी दुल्हन को, ठगोरे बागीदौरा ठगोरी दुल्हन के परिवार में कोई सदस्य बीमार हो गया है कह कर लेने गए लेकिन ठगोरे की बातें शंकास्पद होने पर युवक भी बीमार सदस्य के हाल जानने के नाम पर साथ में ठगोरी दुल्हन एवं उनके ठगोरे साथियों के साथ इंदौर के लिए चला गया।

लेकिन इन ठगोरे का कोई अता-पता नहीं रहता है, जो शादी जैसे पवित्र संस्कारों को कलंकित करने वाले यह ठगोरे जब शादी की व्यक्ति से मोटी रकम ले लेते हैं और नकली परिवार के सदस्य बनकर फिल्मों की तरह ही शादी को सुनियोजित तरीके से करके शादी के बाद में चार-आठ दिन में लड़की को किसी न किसी बहाने से या रस्म अदायगी के नाम पर ले जाते हैं और फिर ऐसे रफूचक्कर हो जाते हैं कि, वह कभी मिलते ही नहीं है। इसी तारतम्य में युवक जब इन ठगोरो के साथ गाड़ी में बैठकर घर से इंदौर के लिए निकल तो गया पर ठगोरो के सामने यह बड़ी समस्या हो गई की आखिर इस युवक को किस स्थान पर ले जाए, जहां पूर्व में ठगोरो ने अपना आशियाना बताया था वहां तो कुछ था ही नहीं। तो आखिर युवक को कहां ले जाए की बात ठगोरो के सामने खड़ी हो गई और हम जहां तक उक्त मामले को समझ पा रहे हैं, उक्त युवक कई सार्वजनिक रूप से कोई तमाशा न कर दे, अगर कोई तमाशा होता है तो तय है इन ठगोरो का पूरा भांडा फूट सकता था तो वहीं युवक को रास्ते में ठगोरो की कारस्तानी पता लगने पर उसे रास्ते से ही हटा दिया और युवक का शव सैलाना के पास एक वृक्ष पर टंगा मिला। पुलिस ने युवक के साथ ठगी हुई का खुलासा तो किया पर युवक की मौत को आत्महत्या बता दिया।

ऐसे कई ठगी के मामले है, जिसमें ऐसे ठगोरे जब इनका कोई सामना करता है या शिकायत करता है तो परिवार को किसी भी स्तर पर उन्हें नुकसान पहुंचाने का कृत्य करने में पीछे नहीं रहते हैं। पर परिजनों व समाज जनों का मानना है कि, यह आत्महत्या नहीं है हत्या का मामला है बात करते हैं उस समय जो घर-बार बताते हैं वह सब फिल्मों की तरह रहते हैं और कोई ना कोई बहाना बनाकर शादी के पूर्व

एक और अन्य मामले में इंदौर के मलारगंज थाने में राजस्थान के युवक ने शादी के नाम पर धोखाधड़ी की रिपोर्ट करवाई दर्ज

ऐसे ठगोरो की न कोई मान मर्यादा है न कोई प्रतिष्ठा है, ठगोरे शादी के नाम पर प्रतिदिन एक नए बकरे की तलाश में रहते हैं और ठगी को अंजाम देकर रफूचक्कर हो जाते हैं। उपरोक्त शादी के नाम से ठगी व हत्या तक के घिनोने मामले के साथ एक और गूंज के सामने ठगी का मामला आया।

राजस्थान के सागवाड़ा क्षेत्र के ग्राम गरियता तहसील गलियाकोट जिला डूंगरपुर के युवक मुकेश पिता छगनलाल ने 15 अगस्त को इंदौर के मलारगंज थाने में रिपोर्ट दर्ज कर शिकायत की है कि, 29 मई 2019 को किरण पिता भगवती प्रसाद जायसवाल निवासी 163 सूर्यदेव नगर हवा बंगला इंदौर के साथ बड़ा गणपति मंदिर इंदौर में निधि पवार निवासी 2-सी राजनगर सेक्टर 3 इंदौर ने विवाह संपन्न करवाया था व अपने आप को किरण बताने वाली युवती ने मेरे साथ विवाह कर मेरे घर ग्राम गरियता आई और घर पर 15 दिनों में रिसेप्शन का आयोजन रखा गया तत्पश्चात सुबह ही निधि पवार के साथ रिश्तेदार बनकर आए व्यक्तियों के साथ वह चली गई, 15 दिन मेरे साथ उक्त युवती रही पर 15 दिनों में किसी प्रकार का कोई पति-पत्नी का संबंध व सम्मोहन नहीं हुआ, मुकेश ने शिकायत में बताया कि, मेरा विवाह निधि पवार ने ही करवाया था, निधि पवार ने किरण की मां लक्ष्मी बीमार हैं जिसके इलाज के लिए ढाई लाख रुपए का सहयोग मांगा व रुपए आने पर वापसी की बात कही, परंतु रिसेप्शन के बाद सुबह गई युवती 5 से 6 महीनों तक उसके मोबाइल नंबर 7898208200 से बात करती रही और कुछ न कुछ बहाना बताकर आने की बात कहती रही पर नहीं आई। जिसके बाद उसके मोबाइल नंबर पर संपर्क होना बंद हो गया तो, विवाह करवाने वाली निधि पवार का 9893219888, 7692832286 के मों. पर बातें होती रही और वह भी कई तरह की बात गुमराह पूर्वक कर टालमटोल करती रही जिसपर जो रुपए दिलवाए वह वापसी करने की बात कही तो, आपको जो करना है वो कर लो, रुपए वापस नहीं मिलेंगे कह कर धमकी दी गई। वही मुझे दहेज व अन्य झूठे केस में फसा दिया जाएगा एवं निधि ने कहा कि, किरण के अब अन्य व्यक्ति के साथ संबंध है और वह उसके साथ रहना चाहती तुम्हारे साथ नहीं।

मुकेश एवं परिवारजनों ने आरोप लगाते हुए गूंज को बताया कि, निधि पवार ने झांसे में फंसाकर हमसे ठगी कर शादी जैसे पवित्र रिश्ते को कलंकित करने का कार्य कर हमारे साथ ठगी की गई है, आगे कोई और ऐसे झांसे में न फसे की सोच के साथ इन ठगोरे का खुलासा हो की नियत के साथ इंदौर के मलारगंज थाने में रिपोर्ट दर्ज करवाई है और हमें उम्मीद है कि, पुलिस निष्पक्ष जांच कर जिसका खुलासा करेगी।

उक्त रिपोर्ट के बाद ठगोरी दुल्हन किरण व निधि से पुलिस ने पूछताछ की जिसके बाद किरण ने शिकयतकर्ता युवक के एक परिजन पर फोन लगाकर धमकी दी गई कि, हमारे विरुद्ध तुमने रिपोर्ट दर्ज करवाकर अच्छा नहीं किया, अब में बताती हूं कि मैं क्या करूंगी की धमकी दी गई, परिजनों ने गूंज को बताया कि, उन्हें शंका है कि, जो नाम आधार कार्ड के अनुसार हमें बताया गया वह किरण नाम भी फर्जी आधार कार्ड के साथ रखा गया है, पुलिस निष्पक्ष जांच कर मामले का खुलासा करती है, तो सभी दूध का दूध व पानी का पानी सामने आ जाएगा और आगे से ठगी से लोग बच पाएंगे।

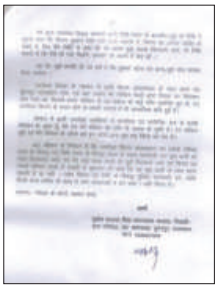

शातिर बाबू रामचंद्र अटकान की कारस्तानी

पत्नी और बहन को दैनिक वेतनभोगी बनाकर बेटियों को उनकी जगह अंशकालीन कर्मचारी बनाकर लगवा दी नौकरी

माही की गूंज, झाबुआ। संजय भेटवा

आदिवासी विकास विभाग में वर्तमान में बीईओ कार्यालय में पदस्थ बाबू रामचंद्र अटकान की कारस्तानिया एक से बडकर एक सामने आ रही है।

परिवार की एक के बाद हुई नियुक्ति में भारी अनियमित्ताए और साठ-गाठ सामने आरही हैं अगर सभी बाबू के परिवार की भर्तियों को सही मान लिया जाए तो ये सिर्फ चमत्कार ही हो सकता है। बाबू के परिवार के सदस्य एक-एक कर अंशकालिक कर्मचारी से लेकर स्थाई कर्मचारी के पद पर पहुँचते रहे और सारे राजनितिक व प्रशासनिक ब्रह्मांड की शक्तियां बिना किसी मदद और मिलीभगत के बाबू के परिवार को आदिवासी विकास विभाग में नोकरी लगवाने के लिए लग गई, खेर यह कोई चमत्कार नही है बल्कि सारा माजरा लेन-देन कर नोकरी देने का है, जिसको योजनाबद्ध तरीके से संस्था के प्राचार्य और बीईओ के साथ मिलकर अंजाम दिया गया है।

पत्नी और बहन की जगह दो बेटियों को किया फिट, इस बार कोई प्रस्ताव नही न ही कोई वैकेंसी

बाबू की नीयत विभाग में खाली पड़े या पैदा किए गए पदों पर इतनी खराब थी कि, पत्नी और बहन को कलेक्टर दर पर नोकरी लगवाते ही खाली हुए पत्नी और बहन के अंशकालिन पद पर दो बेटियों को लगवा कर उन पदो को भी भर दिया, ताकि किसी को मौका नही मिले। बाबू अटकान ने जैसे ही पत्नी शारदा बाई को आदेश क्रमांक 8568/ 2 जुलाई 2011 को अंशकालिन स्वीपर से रसोयन के पद पर कार्य करने की अनुमति कलेक्टर दर पर करवाने के बाद नेहरू कन्या छात्रावास में खाली हुए अंशकालिन स्वीपर पद पर बाबू ने अपनी पुत्री इंद्रा पति विष्णु दंगल को बीईओ पेटलावद के आदेश क्रमांक 1333/ 14 जुलाई 2010 के द्वारा अंशकालिन स्वीपर के पद पर नौकरी लगवा दी, इतना ही नही बाबू की बहन लक्ष्मी खुंडिया का आदेश क्रमांक 354/ 6 जनवरी 2011 अंशकालिन स्वीपर पद से भूत्य के पद पर कलेक्टर दर से लगने के बाद कन्या उमावि पेटलावद में खाली हुए अंशकालिन स्वीपर पद पर बाबू ने अपनी एक ओर बेटी कुमारी आरती पिता रामचंद्र अटकान को आदेश क्रमांक 117/ वर्ष 2011 में बीईओ के आदेश पर नोकरी पर लगवा दिया।

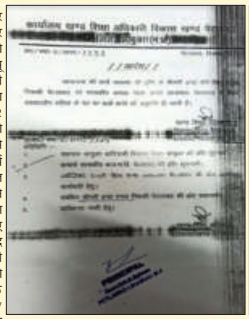

बाबू रामचंद्र अटकान की पत्नी और बहन के स्थान दोनों बेटियों के अंशकालिन पद पर नौकरी के जारी आदेश जो खुद बहुत बड़े फर्जीवाड़े की गवाही दे रहे है।

बेटियों की नियुक्ति के समय भी नही निकली कोई नियुक्ति

पूरे मामले को देख कर साफकहा जा सकता है कि, बाबू ने पत्नी और बहन को स्थाई करने से पहले ही बेटियों की नोकरी की तैयारी कर ली थी। बाबू की बहन और पत्नी की जगह लगी बेटियों की नोकरी से साफहोता है कि, बाबू की सेटिंग अधिकारियो से कितनी पक्की थी कि, बिना किसी वैकेंसी, प्रस्ताव और भर्ती प्रक्रिया को पूरा किए बिना ही मिलीभगत और लेन-देन कर बेटियों को नोकरी पर लगा दिया। शिकायतो में सारे तथ्य निकल कर सामने तो आए, लेकिन नियुक्ति के लिए जिम्मेदार फसने वाले अधिकारियों ने खुद को बचाने के लिए आज तक किसी भी नियुक्ति पर सवाल तक खड़े नही किए!

निरन्तर .....

चार सौ लोगो के सामने पहले चाची-भतीजे के उतरवाए कपड़े, फिर शुद्धीकरण के नाम पर...

एजेंसी, सीकर। राजस्थान के सीकर जिले में खाप पंचायत के एक शर्मनाक आदेश पर चाची और भतीजे को अमानवीयता से गुजरना पड़ा। पंचायत ने दोनों के कपड़े उतरवाए और करीब चार सौ लोगों के सामने नंग्न अवस्था में नहलाया गया। इससे भी शर्मनाक बात यह है कि, पुलिस को घटना के बारे में 11 दिन बाद उस समय पता चला, जब अखिल राजस्थान सांसी समाज सुधार एवं विकास न्यास के प्रदेश अध्यक्ष सवाई सिंह मालावत ने सीकर के एएसपी को इसकी लिखित शिकायत की। इसके बाद पुलिस ने 10 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया है।

कुछ समय पहले सीकर जिले की नेछवा ग्राम पंचायत के सोला गांव के सांसी समाज से जुड़े और रिश्ते में चाची-भतीजा लगने वाले युवक-युवती का एक वीडियो वायरल हो गया था। वीडियो सामने आने पर खाप पंचायत के लोग इकट्ठे हुए और शुद्धीकरण के नाम पर युवक-युवती को बिना कपड़ों के सभी के सामने नहलाने का फरमान सुनाया। सजा सुनाने वाली खाप पंचायत के पंचों ने दोनों के परिवारों पर जुर्माना भी लगाया।

21 अगस्त को गांव में हुई इस खाप पंचायत में सीकर, चूरू, झुंझुनूं और बीकानेर से पंच इकट्ठा हुए थे। सजा सुनाने वाले पंचों में से एक सरकारी नौकरी से रिटायर्ड है और एक सरकारी कर्मचारी है।

सीकर के एएसपी डॉक्टर देवेंद्र शर्मा का कहना है कि, पीड़ितों के परिवार की सहमति से युवक और युवती को नहलाया गया है। युवती के सास-ससुर से पूछताछ की जा रही है। एसटी-एससी सेल के सीओ, लक्ष्मणगढ़ सीओ और थानाधिकारी को भेजकर जांच करवाई गई है।

केन्द्र सरकार ने पबजी समेत 118 चीनी ऐप्स पर लगाए प्रतिबंध

नई दिल्ली। भारत सरकार ने पबजी समेत 118 अतिरिक्त चीनी ऐप्स पर प्रतिबंध लगा दिया है। सरकार को मिली रिपोर्ट अनुसार पबजी भारत सरकार के रडार पर था। लद्दाख की गलवान घाटी में भारत-चीन के बीच बढ़ते तनाव के बीच भारत सरकार ने यह फैसला लिया। मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि, सरकार 118 मोबाइल ऐप पर बैन लगाती है जो भारत की संप्रभुता और अखंडता, भारत की रक्षा, राज्य की सुरक्षा और सार्वजनिक व्यवस्था के लिए खतरा है।

बयान में बताया गया है कि, कई शिकायतें थीं जो विभिन्न स्रोतों से प्राप्त हुई थीं और इसमें उन मोबाइल ऐप्स के दुरुपयोग की रिपोर्टें शामिल थीं जो एंड्रॉइड और आईओएस प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध थीं। शिकायतों में यूजर्स के डेटा की चोरी करने और अनधिकृत तरीके से उन सर्वरों में स्थानांतरित करने के बारे में बात की गई थी जो भारत के बाहर स्थित हैं।

सीएम ने सुनाई आपबीती

बादलों के बीच फंस गया था सीएम का हवाई जहाज, पायलटों की सूझबूझ से बचा हादसा

भोपाल। प्रदेश में भारी बारिश के बीच बाढ़ प्रभावित इलाकों का दौरा करने गए मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का हेलीकॉप्टर बादलों के बीच हादसे का शिकार होते होते बच गया। इससे पहले कोई अनहोनी होती हेलीकॉप्टर के दोनों पायलट ने सूझबूझ दिखाते हुए सीएम शिवराज सिंह से हवाई सर्वे रोककर वापस एयरपोर्ट चलने का अनुरोध किया। यह पूरा वाकया हुआ 29 अगस्त को जब भोपाल समेत पूरे प्रदेश में भारी बारिश हो रही थी। सोमवार को पत्रकारों से बातचीत करते हुए मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने खुद इस घटनाक्रम का जिक्र किया। उन्होंने मध्य प्रदेश शासन के दोनों पायलट आदर्श और संजीव श्रीवास्तव का शुक्रिया करते हुए पूरा घटनाक्रम सुनाया। हेलीकॉप्टर के दोनों पायलट ने बारिश के बादलों से हेलीकॉप्टर को बचाते हुए भोपाल एयरपोर्ट पर सुरक्षित लैंड कराया।

रेस्क्यू टीम को थैंक्यू यू कहा

दोनों पायलट कैप्टन आदर्श और संजय श्रीवास्तव हेलीकॉप्टर का शिवराज ने शुक्रिया किया। उन्होंने कहा कि मैंने रेस्क्यू में लगे दो एमआई 17 और तीन एडवांस लाइट हेलीकॉप्टर के पायलटों को भी हवाई यात्रा के दौरान ही धन्यवाद किया है। युक्ति उन्हें कल शाम तक लौटना था।

कौन-कौन था हेलीकॉप्टर में ?

29 अगस्त को प्रदेश में भारी बारिश हुई थी जिसके बाद मुख्यमंत्री सीहोर और होशंगाबाद के साथ नर्मदा किनारे के गांवों का हवाई सर्वे करने का फैसला किया। बारिश के बीच ही मौसम शिवराज हेलीकॉप्टर में उनके ओएसडी सत्येंद्र खरे, एक पर्सनल सिक्योरिटी जवान, एक न्यूज एजेंसी के कैमरामैन और जनसंपर्क के एक कर्मचारी साथ बैठ कर निकल गए थे, लेकिन जैसे ही हेलीकॉप्टर बारिश के बीच बादलों में पहुंचा तो मौसम और ज्यादा बिगड़ गया जिससे हेलीकॉप्टर में बैठे सदस्य के लोग थोड़ी देर के लिए घबरा गए।

27 सीटों पर उपचुनाव | तैयारी में जोर-शोर से जुटे दोनों दल

भाजपा का सरकार की योजनाएं और बूथ प्रबंधन पर पूरा फोकस

भोपाल

प्रदेश में 27 सीटों पर होने वाले उपचुनावों में भाजपा और कांग्रेस दोनों ही प्रमुख दलों ने पूरी ताकत झोंकने की रणनीति बनाई है। भाजपा जहां 27 में से 18 सीटें जीतने के लिए आशान्वित है वहीं कांग्रेस के उत्साह में कमी नहीं है। कांग्रेस को उम्मीद है कि करीब 20 सीटों पर उसकी विजय होगी। प्रदेश भाजपा संगठन ने वैसे तो 27 सीटों पर अपनी रणनीति बनाई है, लेकिन इनमें से करीब 18 सीटें ऐसी हैं, जिनमें उसे चुनाव जीतने की पूरी आशा है। इन 18 सीटों को चिन्हित कर लिया गया है और अब पार्टी और संगठन दोनों का फोकस इन सीटों पूरी ताकत झोंकने पर रहेगा। इन सीटों पर भाजपा के बड़े नेताओं ने अलग से रणनीति बनाई है।

पार्टी के नेताओं की रणनीति है कि सरकार की सुरक्षित किया जाए। वहिर भाजपा नेताओं का यह भी मानना है कि उपचुनाव में पार्टी को 18 सीटें हर हाल में जीतनी चाहिए। पार्टी कयास है कि पार्टी इन सीटों पर पूरी ताकत झोंकेगी। हालांकि पार्टी की सक्रियता पूरी 27 सीटों पर बूथ स्तर तक रहेगी, साथ ही संगठन कार्यकर्ताओं की टोलियां भी मदद करेंगी। सूत्रों की माने तो इस तरह की रणनीति प्रत्येक विधानसभा के लिए बनाई गई है, लेकिन कुछ सीटों पर संशय होने के कारण जिनाक सीटों पर ज्यादा ध्यान दिया जाएगा। भाजपा प्रदेश संगठन ने जहां सरकार की जन हितैषी योजनाओं को घर-घर तक पहुंचाने के लिए प्रत्येक विधानसभा के मंडल और बूथ स्तर तक के कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित किया है, वहीं बूथ की व्यूह रचना को भी रणनीति में शामिल किया है।

भाजपा को जरूरी सीटों की दरकार

प्रदेश विधानसभा में फिलहाल भाजपा के 107 हैं। साथ ही उसे बसपा, सपा और कुछ निर्दलीयों का समर्थन है, लेकिन पार्टी पूर्ण बहुमत की सरकार चाहती है। जिससे सरकार चलाने में दिक्कत न हो। इसलिए वह 18 सीटों पर जीत का टारगेट लेकर चल रही है।

यदि भाजपा ये 18 सीटें जीतने में कामयाब होती है तो सदन में उसके सदस्यों की संख्या 125 हो जाएगी। साथ ही सपा, बसपा और निर्दलीयों के समर्थन से यह संख्या 130 के ऊपर चली जाएगी। ऐसे में भाजपा को सरकार चलाने में कठिनाई नहीं होगी।

राजीव गांधी बूथ संपर्क अभियान

कांग्रेस राजीव गांधी बूथ संपर्क अभियान के तहत उपचुनाव वाले क्षेत्रों में घर-घर पहुंचने की तैयारी कर रही है। हर घर को कांग्रेस अगले 15 महीने की उपलब्धियों के साथ ही भाजपा ने उसकी सरकार कैसे गिराई इसकी भी बताएगी। शिवराज कार्यसमिति को समीक्षा क्षेत्रों के हर घर में काबाद जाएगा। जिलाने मिल के दाम दरों से मिल दिए जाने, महाकाल मंदिर परिसर में लेकर ओंकारेश्वर मंदिर तक के विकास के लिए स्वीकृत किए 280 करोड़, राम राज गमन पथ का विकास करने जैसे फैसलों को घर-घर तक पहुंचाया जाएगा।

कांग्रेस लगा रही एड़ी-चोटी का जोर

उधर कांग्रेस भी दोबारा सत्ता में काबिज होने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा रही है। पूर्व मुख्यमंत्री और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ ने इसके लिए विधानसभा वार अलग-अलग सर्वे कराए हैं। साथ ही हर विधानसभा के लिए प्रभारी भी नियुक्त किए हैं। इसके तहत पूर्व मंत्री और विधायकों की टीम को एक-एक विधानसभा की जिम्मेदारी सौंपी गई है। नाथ के मुताबिक कांग्रेस को कम से कम 20 सीटें जीतना होगीं। अगर कांग्रेस ये सीटें जीत जाती है तो बसपा, सपा और निर्दलीय विधायक किंगमेकर की भूमिका में आ जाएंगे। विधानसभा की कुल 230 सीटों में से 27 सीटें हटा दी जाएं तो 203 सीटें बचती हैं। भाजपा को 107 विधायकों का समर्थन है जो बहुमत से 5 ज्यादा है। ऐसे में सत्ता में आने के लिए भाजपा को कम से कम 9 और कांग्रेस को 20 सीटें जीतना होगीं। यदि ऐसी स्थिति बनती है तो कमलनाथ सपा, बसपा और निर्दलीय विधायकों के साथ मिलकर सरकार बना सकते हैं। उल्लेखनीय है कि हाल ही में कमलनाथ कह चुके हैं कि यह चुनाव मध्यप्रदेश के भविष्य का चुनाव है। हमारी लड़ाई भाजपा की उपलब्धि से नहीं बल्कि संगठन से है।

विमुक्त जनजाति वर्ग की समस्याओं के निराकरण के लिए होंगी बैठकें

भोपाल। विमुक्त, घुम्मकड़ एवं अर्द्धघुम्मकड़ जनजाति कल्याण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) रामखेलावन पटेल ने कहा है कि राज्य सरकार इन वर्गों के लोगों के विकास के लिए संकल्पित है। उन्होंने कहा कि इन वर्गों की समस्याओं के निराकरण के लिए जल्द ही संभाग स्तर पर बैठकों का सिलसिला शुरू किया जाएगा। इन बैठकों में कमिश्नर और कलेक्टर भी मौजूद रहेंगे। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की पहल पर 4 जुलाई 2013 को मुख्यमंत्री निवास पर हुई विमुक्त, घुम्मकड़ और अर्द्धघुम्मकड़ पंचायत में लिए गए फैसले का अमल किया जा रहा है। उन्होंने इन वर्गों के जनप्रतिनिधियों से योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए सक्रिय सहयोग करने का आग्रह किया। राज्यमंत्री पटेल आज पहले विमुक्त जनजाति दिवस के मौके पर वीडियो कॉन्फ्रेंस को संबोधित कर रहे थे। इस मौके पर मऊगंज के विधायक प्रदीप पटेल भी मौजूद थे।

राज्यमंत्री पटेल ने कहा कि देशभर में जहां भी बड़े तालाब, झील, सरोवर और जलाशय बनें हैं, उन्हें बंजारा समाज के बड़े व्यापारियों और समाज सेवियों ने तैयार किए हैं।

बंगला खाली करने पर सज्जन वर्मा को राहत

भोपाल। पूर्व मंत्रियों से बंगले खाली कराने को लेकर सरकार बैकफुट पर नजर आ रही है। मामला पूर्व कैबिनेट मंत्री सज्जन सिंह वर्मा के सरकारी आवास इ-10 चार इमली से जुड़ा है, इस संबंध में इंदौर उच्च न्यायालय में सरकार की ओर से आवेदन दिया गया सरकार की ओर से अधिवक्ता एडवोकेट जनरल पुष्पेंद्र कौरव न्यायालय में मौजूद रहे। इंदौर उच्च न्यायालय पीठ ने मौखिक निर्देश दिए कि यह मामला जबलपुर उच्च न्यायालय के अधिकार क्षेत्र का है इसे हम यहां हस्तांतरित कर रहे हैं साथ ही न्यायालय ने यह भी निर्देश दिए कि जब तक इस मामले में जबलपुर हाईकोर्ट में सुनवाई ना हो इस पर कोई कार्यवाही नहीं करें

बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में पेयजल की व्यवस्था होगी

भोपाल। प्रमुख सचिव पीएचई मलय श्रीवास्तव ने निर्देश दिए हैं कि बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के सभी पेयजल स्रोतों को जीवाणु रहित किए जाने की कार्यवाही तुरंत की जाए। प्रभावित क्षेत्रों में स्थापित नल-जल प्रदाय योजना बंद होने पर उसे भी तुरंत चालू करवाया जाए। प्रमुख सचिव ने हिदायत दी कि ऐसे क्षेत्रों में जहां किन्हीं कारणों से नलकूप अथवा नल-जल प्रदाय योजना से पेयजल उपलब्ध नहीं हो पा रहा है, उन स्थानों पर संबंधित जनपद के सीईओ से सम्पर्क कर आमजन को टैंकरों के माध्यम से पेयजल उपलब्ध कराया जाए। बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में विद्युत वितरण कंपनी के अधिकारियों से समन्वय स्थापित कर तत्काल खराब ट्रांसफार्मर भी बदलवाएं।

विधानसभा में तबादलों पर हो सकता है हल्ला

भाजपा के सवाल के जवाब में कांग्रेस लाएगी ध्यानाकर्षण

पूर्व कमलनाथ सरकार के दौरान सीताशरण शर्मा ने मांगी थी तबादलों की जानकारी

मध्य प्रदेश विधानसभा का सत्र 21 सितंबर से शुरू हो रहा है और यह 23 सितंबर तक चलेगा

भोपाल

मध्य प्रदेश विधानसभा के 21 सितंबर से शुरू होने जा रहे सत्र में अधिकारियों के तबादलों पर सियासी संग्राम मचना तय है। एक तरफ जहां बीजेपी ने कांग्रेस सरकार के दौरान हुए तबादलों को लेकर सवाल खड़ा किया है तो वहीं, इसके काउंटर में कांग्रेस ने भी ध्यानाकर्षण के जरिए बीजेपी सरकार के दौरान हुए तबादलों पर जानकारी मांगी है।

ऐसे में यह माना जा रहा है कि सत्र के दौरान तबादलों पर सियासी संग्राम मचना लगभग तय है। दरअसल, कांग्रेस सरकार के दौरान हुए तबादलों को लेकर पूर्व विधानसभा अध्यक्ष सीताशरण शर्मा ने जानकारी मांगी थी। इसके जवाब में अब पूर्व मंत्री और कांग्रेस के सीनियर विधायक पीसी शर्मा ने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के चौथी बार मुख्यमंत्री की शपथ लेने के दिन से लेकर अब तक हुए अधिकारियों के तबादलों की जानकारी ध्यानाकर्षण के जरिए मांगी है।

पीसी शर्मा ने मांगी भाजपा सरकार में हुए तबादलों की जानकारी

दरअसल, बीजेपी नेता और पूर्व विधानसभा अध्यक्ष सीताशरण शर्मा ने कांग्रेस सरकार के दौरान 15 दिसम्बर 2018 से लेकर जून 2019 तक हुए तबादलों की जानकारी तत्कालीन कांग्रेस सरकार के दौरान मांगी थी। इसमें तबादले पर हुए खर्च और उनके लिए अर्ह विधायिकों के बारे में भी जानकारी मांगी गई थी। लेकिन तब सरकार की ओर से जानकारी अधिक विस्तृत होने का हवाला देते हुए जवाब देने से इनकार कर दिया था। लेकिन अब सत्ता में बीजेपी आ चुकी है और 21 सितम्बर से विधानसभा का सत्र शुरू हो रहा है तो सीताशरण शर्मा के सवाल को साझा करते हुए सवाल का जवाब तैयार किया जा रहा है। वहीं, इसका काउंटर करने के लिए कांग्रेस ने कमर कस ली है और पूर्व मंत्री पीसी शर्मा की ओर से ध्यानाकर्षण लगाकर बीजेपी की सरकार में अब तक हुए तबादलों की जानकारी मांगी गई है।

तबादला, सत्र और सियासत

मध्य प्रदेश विधानसभा का सत्र 21 सितंबर से शुरू हो रहा है और यह 23 सितंबर तक चलेगा। सत्र में तबादलों को लेकर सवाल जवाब से सियासी पारा चढ़ाना तय है। बीजेपी यह आरोप लगाती रही है कि जब प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनी तो 15 महीनों के अंदर अधिकारियों के थोक बंद तबादले किए गए। अधिकारियों के तुगलकी पोस्टिंग पर शासन का करोड़ों रुपए भी बर्बाद हुआ। वहीं, कांग्रेस की माने तो बीजेपी के आरोप निराधार हैं और खुद बीजेपी की सत्ता आते ही ट्रांसफर पोस्टिंग का खेल जारी हो गया है। ऐसे में अब देखना यह है कि क्या इन सवालों के बीच विधानसभा में बाकि मुद्दे हंगामे की भेंट तो नहीं चढ़ जाएंगे।

मतपत्र से मतदान नहीं हुए तो 2024 का चुनाव अंतिम होगा: दिग्विजय सिंह

भोपाल। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने चुनाव में ईवीएम के उपयोग पर सवाल उठाए हैं और कहा है कि अगर मतपत्र की तरफ वापस नहीं लौटे तो वर्ष 2024 में होने वाला संसद का चुनाव अंतिम चुनाव हो सकता है। पूर्व मुख्यमंत्री सिंह ने सोमवार को ट्वीट करते हुए ब्रिटिश लेखक केरोल जेने केकवाल्डर के बयान पर सहमति जताते हुए कहा, आप बिल्कुल सही कह रही हैं मैडम, भारत में ईवीएम टेक्नोलॉजी के माध्यम से संसद चुनाव में बड़े पैमाने पर धांधली करके भारतीय लोकतंत्र को नष्ट किया जा रहा है। वर्ष 2024 के संसद (लोकसभा) का चुनाव भारत का आखिरी चुनाव हो सकता है। अगर हम भारतीय, मतपत्र के लिए वापस जाने के लिए नहीं उठते हैं।

स्वास्थ्यकर्मियों ने खून से लिखा मुख्यमंत्री को पत्र, कहा-

सरकार हमें कुछ नहीं दे पाई, इच्छामृत्यु ही दे दे, संविदा से छुटकारा मिल जाएगा

भोपाल

संविदा स्वास्थ्यकर्मियों ने सोमवार को नियमितीकरण सहित अपनी अन्य मांगों को लेकर पोस्ट कार्ड अभियान चलाया। सभी ने अपने खून से पोस्टकार्ड पर अपनी मांगों को लिखा और मांग नहीं मानने पर इच्छामृत्यु की मांग की। उनका कहना है कि नियमित करने, 90 फीसदी वेतन देने का हमारा आवेदन सरकार ने आज तक स्वीकार नहीं किया। ऐसे में हमें इच्छामृत्यु का हमारा आवेदन ही सरकार स्वीकार कर ले। हमें संविदा से मुक्ति मिल जाएगी। सरकार और कुछ तो दे नहीं पाई, संविदा कर्मियों को इच्छामृत्यु ही दे दे। जिला अध्यक्ष नीतू कन्दे ने कहा कि नियमितीकरण को लेकर 5 जून 2018 को सामान्य प्रशासनिक विभाग ने एक पॉलिसी बनाई थी। जिसे एक दर्जन से ज्यादा विभागों में लागू कर दिया गया, लेकिन स्वास्थ्य विभाग में इसे अब तक लागू नहीं किया गया। कोरोना में ड्यूटी करते हुए 6 संविदाकर्मियों की मौत हो चुकी है।

शहीद कोरोना योद्धा को नहीं मिली नौकरी

अब तक सरकार द्वारा शहीद कोरोना योद्धा के परिवार को 50 लाख रुपए और नौकरी नहीं दी है। इसके अलावा मुख्यमंत्री कोविड-19 से संक्रिकल्पों पीपी है। हमें 50 हजार रुपए के अतिरिक्त प्रोत्साहन राशि देने का वादा किया गया था। वह भी नहीं मिला है। हम बिना बीमा, अनुकंपा, सामाजिक सुरक्षा, महंगाई-दैनिक भत्ते के अलावा नियमित स्वास्थ्यकर्मियों की तुलना में आधे वेतन में काम कर रहे हैं। सरकार अपने ही द्वारा लागू नियमों का पालन नहीं कर रही है।

आप के पदाधिकारी समेत सैकड़ों कार्यकर्ता कांग्रेस में हुए शामिल

भोपाल

पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ के समक्ष आज भोपाल में उनके निवास पर ग्वालियर चंबल एवं सागर संभाग के आप पार्टी के पदाधिकारी अपने सैकड़ों कार्यकताओं के साथ कांग्रेस पार्टी में शामिल हुए।

शामिल होने वालों में प्रमुख रूप से आप पार्टी के प्रदेश संगठन सचिव और संस्थापक सदस्य हिमांशु कुलश्रेष्ठ के साथ युवा इकाई के प्रदेश सचिव जयवीर सिंह सोमवंशी ,पंचल संभाग के उपाध्यक्ष सत्येंद्र सिंह तोमर ,सोमेश शर्मा ,संभागीय सचिव शुभम गुप्ता ,भिंड जिला युवा इकाई के अध्यक्ष विकास शर्मा ,ग्वालियर महिला विंग की जिला अध्यक्ष सुशीला आर्य ,जिला सह सचिव ग्वालियर मंडी सागर संभाग की युवा इकाई के अध्यक्ष केश कुमार राजपूत ,शिवपुरी के युवा इकाई की नगर अध्यक्ष , जिला कार्यसमिति के सदस्य पंकज मंडल ,अध्यक्ष आकाश कुशवाहा , अंकित कुशवाह ,रवि कुशवाहा ,हिमांशु तिवारी ,नवनीत सिंह , सुमित अग्रवाल , भिंड के लाल चंद कुशवाहा ,भागचंद सिंह ,रामदास मंडल मंत्री ,बड़ा मलहरा छतरपुर ,राघव शर्मा ,ब्लॉक अध्यक्ष सिंह लोधी एवं किसान संगठन अध्यक्ष जगदीश सिंह सहित सैकड़ो कार्यकर्ता है।

कांग्रेस के आरोप पर मिश्रा का पलटवार

फूट डालो राज करो की नीति अपनाती है कांग्रेस

भोपाल

बाढ़ को लेकर कांग्रेस की तरफ से शिवराज सरकार पर किए जा रहे हमलों का जवाब अब बीजेपी की तरफ से भी दिए जाने लगे हैं। मंत्री नरोत्तम मिश्रा ने कांग्रेस पर हमला बोलते हुए कहा कि कांग्रेस में अधिकांश रिटायमेंट वाले हैं, जो खटिया डालकर बैठे हैं, मंत्री नरोत्तम मिश्रा ने कहा कि कांग्रेस शुरू से ही जाति की राजनीति करती है। अंग्रेजों की भीम फूट डालो राज करो की भीम कांग्रेस की रहती है।

कांग्रेस को लोगों के बीच जाना चाहिए

मिश्रा ने कहा कि अभी कांग्रेस को बाढ़ के कारण लोगों के बीच जाना चाहिए, लेकिन वे क्रियाकलाप में लगे हैं। मंत्री भूपेंद्र सिंह ने कहा कि कांग्रेस को हर विषय पर राजनीति नहीं करना चाहिए। कोरोना महामारी सभी जगह बढ़ रही है। सरकार द्वारा उसकी रोकथाम के उपाय भी किए जा रहे हैं। बीसी शर्मा ने कहा कि कोरोना से देश में 80 हजार केस आ रहे हैं। सरकार कंट्रोल करने में नाकामयाब।

कंप्यूटर बाबा का आरोप

शिवराज सरकार ने प्रदेश में शुरू की गाय मारो योजना

भोपाल। मध्य प्रदेश के विधानसभा चुनाव से ठीक पहले शिवराज सरकार के खिलाफ खड़े हुए कम्प्यूटर बाबा ने फिर से मोर्चा खोल दिया है। कम्प्यूटर बाबा ने शिवराज सरकार को धर्म विरोधी बताया है। सोमवार को पत्रकारों से बात करते हुए कम्प्यूटर बाबा ने आरोप लगाया है कि शिवराज सरकार ने प्रदेश में गाय मारो योजना शुरू कर दी है। कम्प्यूटर बाबा ने कहा कि शिवराज सरकार ने प्रदेश की लगभग 1300 गोशालाओं में रहने वाली 1 लाख 80 हजार गायों के लिए 11 करोड़ का आयोजन किया है। यानी एक गाय को एक दिन में महज 1 रुपए 60 पैसे का भोजन ही सरकार की ओर से उपलब्ध कराया जाएगा। उन्होंने सीएम शिवराज पर तंज कसते हुए कहा कि जब घास की छोटी गठरी पांच रुपए में आती है तो 1 रुपए 60 पैसे में क्या होगा। कम्प्यूटर बाबा ने पूर्ववर्ती कमलनाथ सरकार की तारीफ की और कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने प्रदेश की गोशालाओं के लिए 132 करोड़ रुपए स्वीकृत किए थे।

संस्कृत विश्वविद्यालय उज्जैन में योग और शिक्षा भवन का शिलान्यास सम्पन्न

कोविड से लड़ाई में जीवन और आजीविका दोनों की सुरक्षा जरूरी

भोपाल

राज्यपाल आनंदी बेन पटेल ने कहा है कि कोविड-19 की लड़ाई में जीवन और आजीविका दोनों की सुरक्षा पर ध्यान देना जरूरी है। उन्होंने युवाओं का आव्हान किया है कि अपने सपनों को पूरा करने के प्रयासों में वे निरंतर जुटे रहें। सफलता निश्चित है।

हमारे इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण मौजूद है जब बड़े संकटों, चुनौतियों के बाद सामाजिक, आर्थिक और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का कार्य नई उर्जा के साथ सफलता पूर्वक हुआ है। पटेल आज लखनऊ राजभवन से ऑनलाइन महर्षि पाणिनी संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय के योगेश्वर श्रीकृष्ण योग भवन एवं आचार्य संदीपनि शिक्षा भवन के शिलान्यास कार्यक्रम को सम्बोधित कर रही थीं। राज्यपाल आनंदी बेन पटेल ने आव्हान किया है कि एक भारत सर्वश्रेष्ठ भारत की परिकल्पना को साकार करने के लिए हर क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ के लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ना होगा। यह तब करना होगा कि साधारण से काम नहीं चलेगा। सर्व श्रेष्ठ उत्पादन, सर्वश्रेष्ठ श्रम और सर्वश्रेष्ठ शासन को लक्ष्य बनाएं। उन्होंने कहा कि देश और युवाओं का भविष्य उज्ज्वल है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति से, युगानुरूप युक्त नई शिक्षा व्यवस्था विकसित होगी जो भविष्य में आने वाली चुनौतियों को अवसर में बदलकर नए भारत का मार्ग प्रशस्त करेगी। शिक्षा में समावेशन, नवाचार और संस्कार संस्कृति की मजबूती के प्रयास जरूरी है। विवि नवीन शिक्षा नीति के अनुसार संस्कृत भाषा तथा साहित्य के विस्तार को आधुनिक सन्दर्भों में व्यापक कार्ययोजना तैयार करें।

आत्मनिर्भर भारत की प्रतिज्ञा करें

राज्यपाल ने कहा कि प्रत्येक नागरिक आत्मनिर्भर भारत की प्रतिज्ञा करें। यह तय करें कि अगस्त को दाम से दाम करने की दिशा में योगदान करेंगे। लघु उद्योगों को सशक्त बनाने लोकल के लिए वोकल बनेंगे। अधिक से अधिक नवाचार करेंगे। युवाओं, महिलाओं अधिकारियों दलितों, किसानों गरीब और पिछड़े व्यक्तियों और क्षेत्रों सभी को सशक्त बनाने के लिए मन, वचन और कर्म से कार्य करने के प्रण के साथ प्रयास करेंगे।

विश्वविद्यालय को विश्व-स्तरीय बनाने के प्रयास

उच्च शिक्षामंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि विश्वविद्यालय को विश्वस्तरीय बनाने के प्रयास किए जाने चाहिए। विश्वविद्यालय की आवश्यकताओं को प्राथमिकता के क्रम में चिन्हित कर प्रस्तुत किया जाए। नेक और यू.जी.सी. की मान्यता के लिए आवश्यकताओं को शीघ्र पूरा कराने का प्रयास किया जाएगा। उन्होंने कहा कि कोविड-19 संक्रमण से बचाव के प्रयासों में योग की महत्ता को और अधिक मजबूती मिली है। इस अवसर पर योग भवन निर्माण का प्रयास सम्बन्धित पहल है। विश्वविद्यालय प्रबंधन को हार्दिक बधाई। कुलपति डॉ. पंकज जायसी ने बताया कि विश्वविद्यालय के वित्तीय स्त्रोतों से भवन का निर्माण किया जा रहा है।

दुर्घटना में मासूम की मौत, सारंगी के पास हुआ एक्सीडेंट

माही की गूंज, सारंगी। सोमवार को थांदला-बदनावर मार्ग पर सारंगी के समीप 2 बाइक व कार के बिच भिड़ंत हो गई, जिसमें एक 4 वर्षीय बालिका की मौत हो गई व 5 लोग बुरी तरह घायल हो गए। दुर्घटना सारंगी के पास 2 बाइक पर 6 लोग सवार थे, जिनकी भिड़न्त भोपाल से अहमदाबाद जा रही कार से हुई। बाइक पर बैठी एक 4 वर्षीय बालिका की मौके पर दर्दनाक मौत हो गई।

कुंदनपुर ग्रामीण इलाकों में बारिश से सब्जियों के दाम हुए दोगुने, कुंदनपुर में हरा धनिया 200 रुपए किलो में बिका

माही की गूंज, कुंदनपुर। कृष्णपाल सिंह ठाकुर

कभी सब्जियों के साथ मुफ्त मिलने वाला धनिया, जिसके भाव आसमान छू रहे हैं। कुंदनपुर में सोमवार को हाट बाजार नही लगने से सब्जियों के दाम में भारी बड़त देखने को मिली है। हरा धनिया के दाम 200 रुपए प्रति किलो रहे। इन दिनों बारिश का मौसम होने से मंडियों में सब्जियों की आवक कम हो गई है, ऐसे में सब्जियों के दाम दोगुने हो गए हैं। सब्जियों के भाव में बढ़ोतरी होने से आमजन को मार झेलनी पड़ रही है। जहां मंडी में दोगुने भाव में सब्जियां मिल रही है तो हाथ ठेलों वाले गली-मौहल्ले में फुटकर व्यापारी महंगे दाम पर सब्जियां बेच रहे हैं।

सब्जी विक्रेता अपनी मनमानी से सब्जियों के दाम वसूल रहे

सब्जी विक्रेताओं की मनमानी आम जनता के लिए परेशानी का सबब बनी हुई है, सब्जी विक्रेता हाट बाजार नही लगने के चलते लोग दोगुने दामों पर सब्जी खरीदने को मजबूर हो गए है। जिससे आम आदमी के बजट पर खासा प्रभावा पड़ रहा है।

मोटा भाई के राज में अटक गया नगर का विकास, जनता समय पूरा होने का कर रही है इंतजार

तीन वर्ष कार्यकाल में बदले जा चुके हैं पांच सीएमओ, शर्मा गए और शर्मा आए

माही की गूंज, पेटलावद।

नगर विकास के सपने सजा कर नगर की जनता ने नगर परिषद के चुनाव में मनोहरलाल भटेवरा उर्फ मोटा भाई और भाजपा को बहुमत दिया था लेकिन बीते तीन वर्षों में नगर की जनता के सपने, सपने ही बनकर रह गए। नगर का विकास दूर-दूर तक नही हो पाया और तीन वर्ष में नगर की जनता मोटा भाई से त्राहिमाम कर गई। जनता ने मोटा भाई ओर वर्तमान नगर परिषद से किसी प्रकार के विकास की आस पूरी तरह से छोड़ दी है और नगर के मतदाता अगले चुनाव का इंतजार कर रही है। वर्तमान में पेटलावद नगर परिषद विकास के स्थान पर राजनीति का अड्डा बन चुकी है, पिछले 3 वर्षों से नगर परिषद पर भाजपा का कब्जा है, अध्यक्ष सहित कुल 13 पार्षद बीजेपी से प्रतिनिधित्व करते हैं लेकिन विकास के नाम पर लगातार पेटलावद पिछड़ता जा रहा है, इसके पीछे सिर्फ और सिर्फराजनीति की ही पोहबारा है। पेटलावद में राजनीति इस कदर हावी है कि, पेटलावद नगर परिषद में पिछले 3 साल में पांच सीएमओ बदले जा चुके हैं और एक भी सीएमओ 12 माह से अधिक अपना कामकाज पूरा नहीं कर सका है। पूर्व सीएमओ लालसिंह राठौड़ जैसे-तैसे टिकते नजर आ रहे थे कि, 10वे माह में उनका भी पत्ता कट गया और संदेश शर्मा सीएमओ ने नगर परिषद सीएमओ का पदभार लिया ही था कि, अभी नगर परिषद को ठीक से समझे भी नही थे कि एक माह में ही उनकी भी रवानगी के आदेश आ गए और पेटलावद नगर परिषद के सीएमओ संदेश शर्मा का स्थानांतरण करते हुए मनोज शर्मा को पेटलावद सीएमओ का प्रभार दिया जा रहा है। एक के बाद एक हो रहे सीएमओ के तबादले से नगर के विकास का पहिया एक जगह अटक गया हैं। नगर परिषद में बार-बार सीएमओ बदले जाने से पेटलावद का विकास अवरुद्ध हो रहा है। वही अध्यक्ष और सीएमओ के बीच तालमेल की कमी से न सिर्फ कार्यालय का काम-काज अवरुद्ध किया, अध्यक्ष मोटा भाई अपने निजी हितों को साधने के लिए सारे नियम कायदों को ताक में रख दिए, जिसके लिए उन्हें अपने इशारों पर चलने वाला सीएमओ लाना चाहते है और वर्तमान नगर परिषद में केवल निजी व्यक्तिगत स्वार्थ की योजनाओं पर लक्ष्य बना कर कार्य कर रही है, जिसके दुष्परिणाम नगर की जनता पिछले तीन वर्षो से भुगत रही है।

न आवास की मिली राशि न ही नल-जल लाईन से नगरवासियों का हुआ लाभ

वैसे तो नगर में कई बड़े मुद्दे हैं जिसको पूरे करने का सपना चुनाव में जनता को मोटा भाई ने अपने आपको मोटा बनकर दिखाया गया था, जिसमे बस स्टेशन, पार्क, रोजगार के लिए नए मार्केट, स्थाई सब्जी और मटन मार्केट जैसे बड़े वादे अब तक खोखले साबित हुए है, लेकिन मोटा भाई के कार्यालय में दो बड़ी उपलब्धि मिल सकती थी, जो आज उपलब्धि के स्थान पर गले कि फास बन गई है, दो वर्ष पूर्व स्वीकृत हुए 202 प्रधानमंत्री आवास जिसकी पहली किश्त भी नगर परिषद के खाते में आकर पड़ी है, और मोटे भाई का ऐसा रहमोकरम है कि, वो राशि आज दिन तक हितग्राहियों तक नही पहुँच सकी है।

वही नगर में करोड़ो की लागत से बिछाई जा रही आरो वाटर लाईन में कमीशन का खुला खेल खेलकर नगर के सभी वार्डो की हालत खस्ता कर दी गई। लाईन के ठेकेदार द्वारा नगर के लाखों की लागत से बने सीमेंट क्रांकीट की सड़कें खोद डाली, नगर परिषद द्वारा मेंटेनेंस टीम के ठेकेदार पर किसी प्रकार की लगाम नही लगाई गई, नतीजन मनमाने ढंग से हुए कार्य के कारण आज तक नगरवासीयो को परेशानी उठानी पड रही है। ठेकेदार द्वारा लाईन के लिए खोदी गई सड़को को मापदंडों के मुताबिक अब तक बन्द नही किया गया जो बारिश में परेशानी का सबब बनी हुई है और जहा खोदी गई सड़के बन्द की गई वहाँ नगर परिषद की ऐसी सेटिंग हैं कि ठेकेदार के घटिया निर्णय कार्य पर किसी प्रकार की कोई कार्यवाही नगर अध्यक्ष द्वारा नही की जा रही है, मोटा भाई कई विवादित स्थानों पर तो ठेकेदार के साथ खड़े होकर सड़के खुदवाते दिखाई दिए लेकिन जब खुदी हुई सड़को की मरम्मत का समय आया तो गायब हो गए , जिसके चलते कुछ वार्ड के पार्षद भी मुखर होकर खुद के दम पर ठेकेदार के विरुद्ध कार्यवाही कर रहे हैं ।

केवल निजी लाभ के लिए कार्य कर रहे हैं मोटा भाई

नगर अध्यक्ष मनोहर भटेवरा की अब तक कि कार्यप्रणाली को देखा जाए तो केवल निजी स्वार्थ के अलावा कोई कार्य करते नही देखे गए, मामला प्रस्तावित बस स्टेशन का हो या भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ चुके बालोद्यान में दुकाने निकालने का, हर जगह केवल स्वहित पर ही अपने आपको केन्द्रीत कर काम किया जा रहा है, 15 माह की कांग्रेस सरकार में ही अपना हित साधने के उद्देश्य से भाजपा से किनारा कर बैठे और नगर परिषद में सीएमओ बदलने का खेल, खेल रहे हैं।

कांग्रेस किसानो की समस्याओं को लेकर आज राज्यपाल के नाम रैली निकाल कर कलेक्टर को सौपेंगे ज्ञापन

माही की गूंज, झाबुआ।

कांग्रेस कमेटी के द्वारा कर्ज माफी और बिजली की कटोती एवं फसल समस्याओं से जूझ रहे प्रदेश के किसानों की वर्तमान समस्याओं को लेकर पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं क्षेत्रीय विधायक कांतिलाल भूरिया के नेतृत्व में विधायक वीरसिंह भूरिया, विधायक वालसिंह मैड़ा, पूर्व विधायक जेवियर मेड़ा, जिला किसान कांग्रेस अध्यक्ष नन्दलाल मैड़ा, जिला कांग्रेस कार्यवाहक अध्यक्ष हेमचन्द डामोर, रूपसिंह डामोर, युवा नेता डॉ. विक्रांत भूरिया सहित जिले के ब्लॉक अध्यक्षगण किसान प्रतिनिधिगण एवं कांग्रेसजनों की उपस्थिति में स्थानीय बस स्टेण्ड पर आज 11 बजे एकत्रित होंगे तथा वहां से किसान रैली के रूप में कलेक्टर कार्यालय पहुंचकर महामहिम राज्यपाल के नाम कलेक्टर महोदय को ज्ञापन सौपेंगे। युवा नेता डॉ. विक्रांत भूरिया एवं ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष काना गुण्डिया ने जानकारी देते हुए बताया कि, जिले में किसानों की अधिकांश फसलें बर्बाद हो गई है, किन्तु अभी तक जिले में किसानों की बर्बाद फसलों का सर्वे नही कराया गया है। इन सब बातों को लेकर किसानों में आक्रोश व्याप्त है। डॉ. भूरिया ने कहा कि, सभी कांग्रेसजन स्थानीय बस स्टेण्ड पर एकत्रित होंगे, कोविड 19 के नियमों के अनुसार, मास्क पहनकर एवं सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए कलेक्टर कार्यालय पहुंचकर कलेक्टर महोदय को ज्ञापन सौंपेंगे। जिला कांग्रेस ने सभी पिड़ित कृषकों से अपनी बर्बाद हुई फसलों के नमूनों के साथ उपस्थित होने की अपील की है। साथ ही पार्टी पदाधिकारियों से भी इस अवसर पर उपस्थित होने की अपील की गई।

निजी बैंक के लोन एजेन्ट से लूट की वारदात कर फरार आरोपियों को रतलाम पुलिस ने किया गिरफ्तार

माही की गूंज, रतलाम।

मगलवार को कंट्रोल रूम पर प्रेसवार्ता के दौरान एसपी गौरव तिवारी ने पुरे मामले की जानकारी देते हुए बताया कि, 18 अगस्त को जिले के ग्राम मसवाड़िया जिला उज्जैन से ग्रुप लोन का कलेक्शन कर एजेंट विकास पिता मुकुंदीलाल वर्मा 27 वर्ष बिलपांक थाना क्षेत्र में भीलखेड़ा के कच्चे रास्ते पर मोटरसाइकिल से जा रहा था, तभी पूर्व से घात लगाए बैठे बदमाशों द्वारा बांस के डंडे से मारपीट कर विकास से नगदी, टेबलेट, मशीन, बैंक लोन के कागज, आधार कार्ड, पैन कार्ड, लाइसेंस अन्य बैंक के कागज कुल एक लाख रूपए से अधिक की राशि का माल लूट कर भाग गए थे। जिसके बाद विकास की रिपोर्ट पर बिलपांक थाने पर धारा 394, 397 के तहत मामला दर्ज किया गया।

पुलिस ने एक टीम का गठन कर मामले की छानबीन करवाई। इस बीच पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर मसवाड़िया जिला उज्जैन के निवासी रोहित पिता शशिकांत उर्फ शातिलाल पाटीदार (23), गोपालसिंह पिता ईश्वरसिंह राजपूत (19), लाला उर्फ विजयसिंह पिता रतनसिंह राजपूत (19), संदीप पिता रामचंद सुतार (18), अजयसिंह पिता बृजपालसिंह राजपूत (22) और एक नाबालिक किशोर को गिरफ्तार कर पूछताछ की।

पूछताछ के दौरान सभी आरोपियों ने घटना को अंजाम देना कबूल किया। पुलिस ने आरोपियों की निशानदेही से लुटे हुए माल को बरामद कर लिया है। उक्त मामले में सराहनीय कार्य करने पर एसपी गौरव तिवारी ने बिलपांक थाना प्रभारी और उनकी टीम को 10 हजार रूपये इनाम देने की घोषणा की है।

प्रशासनिक दौरे पर आए नवागत कलेक्टर व एसपी ने फसलों व बगीचे का किया दौरा खराब हुई फसल का जायजा लिया

माही की गूंज, सारंगी। नवागत कलेक्टर रोहित सिंह व एसपी आशुतोष गुप्ता, पेटलावद एसडीएम शिशिर गेमावत ने जिले के अधिकारियों के साथ पेटलावद, करडावद, टेमरिया का दौरा किया, किसानों से रूबरू होकर बिगड़ी फसलों का जायजा लिया, कृषि विस्तार अधिकारियों को किसानों की समस्या के बारे में निर्देशित किया। वही सारंगी पहुंचकर बालाराम पाटीदार के खेत पर जाकर बगीचे में लगाए हुए जामफल, केला, नींबू,, चंदन, पाइनापल, संतरा सभी फलों की खेती की जानकारी बलराम पाटीदार द्वारा नवागत कलेक्टर व एसपी को एक-एक करके दी गई। कलेक्टर रोहित सिंह ने कृषि विस्तार अधिकारी को निर्देश दिए कि, कृषि दर्शन के अंतर्गत यहां पर ज्यादा से ज्यादा किसानों को लाकर कृषि करने के तरीके के बारे में बताया जाए ताकि और भी किसान खेती करने के तरीके सीख कर अपना उत्पादन बढ़ा सकें।

जिला प्रशासन के आदेश अनुसार नगर की गणेश प्रतिमाओं का हुआ विसर्जन

माही की गूंज सारंगी, संजय उपाध्याय

दस दिवसीय गणेश उत्सव का पर्व मंगलवार को संपन्न हुआ इस वर्ष कोराना महामारी के चलते गली-मोहल्ले व चौराहे पर भगवान गणेश जी की प्रतिमा स्थापित नहीं की गई थी, हालांकि गणेश जी के भक्तों ने उत्साह पूर्वक अपने विघ्नहर्ता को अपने-अपने घरों पर शुभ मुहूर्त में विराजित कर सुबह-शाम पूजा-अर्चना कर उनकी आरती उतारकर प्रसाद का भोग लगाया।

नगर में इस वर्ष गणेश उत्सव पर्व की रौनक प्रतिवर्ष अनुसार नजर नहीं आई, लेकिन हिंदू समाज के सैकड़ों घरों में उत्साह और उमंग का माहौल दिखाई दिया। अनंत चतुर्थी के अवसर पर मंगलवार को गणेश प्रतिमाओं के विसर्जन के लिए जिला प्रशासन के आदेश अनुसार ग्राम पंचायत द्वारा विशेष व्यवस्था की गई थी, नगर के बरवेट मार्ग पर हीराजरी तालाब पर एक कुंड बनाया गया, उसी कुंड में गणेश जी की प्रतिमाओं का विसर्जन किया गया।

ग्राम पंचायत द्वारा इस वर्ष कोरोना महामारी के चलते जिला प्रशासन के निर्देशानुसार ग्राम पंचायत द्वारा मंगलवार को गणपति प्रतिमा विसर्जन हेतु ट्रैक्टर तैयार कर पूरे नगर में घूम कर घर-घर से भक्तों ने अपनी प्रतिमाएं आरती पूजन कर ट्रैक्टर में बिठाए। ग्राम पंचायत रोजगार सहायक रवि सोलंकी ने बताया कि, मंगलवार को प्रत्येक वार्ड में घर-घर चौराहे से भगवान गणेश जी की प्रतिमा संग्रहित की गई।

चौकी प्रभारी उषा अलावा के नेतृत्व में पुलिस जवान ने जनता से अपील कर कहा था कि, अपने-अपने घर पर स्थापित गणेश प्रतिमा का विसर्जन कर के ग्राम पंचायत के द्वारा संचालित गणपति विसर्जन के लिए ट्रैक्टर की व्यवस्था की गई है, उसमें चौकीदार लक्ष्मण को गणेश जी की प्रतिमा दे दी जाए, साथ ही सोशल डिस्टेंसिंग का पालन कर एवं मास्क लगाकर अनिवार्य रूप से गणेश प्रतिमा ट्रैक्टर पर देने आए।

नगर के लोगों ने भी जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासन व ग्राम पंचायत के आदेशानुसार नियम का पालन करते हुए गणेश जी की प्रतिमा का विसर्जन किया तथा प्रशासन को पूर्ण सहयोग दिया।

खराब हुई फसलों को लेकर किसानों ने जयस के बैनर तले मुख्यमंत्री के नाम सौंपा ज्ञापन

माही की गूंज, झाबुआ।

जय आदिवासी युवा शक्ति (जयस) हमेशा अंतिम पंक्ति में खड़े हर वर्ग की लड़ाई लड़ता आया है, इस बार मेघनगर व आसपास के गांव आमली पठार, हीरापुर, अगराल, देदला, सजेली, गोपालपुरा, गुड़ा व ढूंढका के किसानों ने जय आदिवासी युवा शक्ति (जयस) के बैनर तले अपनी मांगों को लेकर मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय शिवराज सिंह के नाम नायब तहसीलदार को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में अतिवर्षा से खराब हुई अपनी फसलो के उचित मुआवजे की मांग की है। किसानों ने बताया कि, अतिवर्षा से हमारी फसलें जैसे सोयाबीन, मक्का, कपास, उड़द की फसल पूरी तरह से खराब हो गई है, इसलिए मेघनगर जनपद की सभी ग्राम पंचायतों में कृषि विभाग के अधिकारियों के साथ पटवारियों के द्वारा प्रत्येक खेत का सर्वे करवाकर पीड़ित किसानों को उचित मुआवजा देने की मांग की है। कई किसान भाई अपने खेतों में खराब हुई फसल के पौधे भी अपने साथ तहसील कार्यालय पर लेकर आए। ज्ञापन का वाचन जयस जिला मीडिया प्रभारी

दिनेश वसुनिया के द्वारा किया गया। ज्ञापन देने में माधुसिंह डामोर, जयस अध्यक्ष, थाँमस भूरिया, ओमप्रकाश मैड़ा, राकेश मुनिया, रमसू डांगी, मुकेश झारिया, तेजीया वसुनिया आदि बड़ी संख्या में जयस कार्यकर्ताओं के साथ किसान भी उपस्थित थे।

एसडीएम श्री बघेल ने किया फसलों का निरीक्षण

माही की गूंज, खवासा। करीब 3 दिन हुई तेज एवं अम्लीय वर्षा होने से किसानों की अधिकांश फसल बर्बाद हो गई। बुधवार को थांदला एसडीएम श्री बघेल अपने अमले के साथ किसानों की बर्बाद हुई फसलों का निरीक्षण करने पहुंचे, एसडीएम ने किसानों को कहा आपकी फसलों का पूरा मुआवना संबंधित अधिकारियों द्वारा किया जाएगा, जब अधिकारी पंचनामा बनाने आए तो उन्हें फसलो की पूरी स्थिति बताना, वही श्री बघेल ने किसानों को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की अंतिम तारीख 31 अगस्त से बढ़ाकर 4 सितंबर कर दी गई है, 4 सितंबर तक सभी किसान अपनी फसल बीमा करवा ले की बात कही। गूंज को उक्त जानकारी खवासा हल्के के पटवारी भूरिया द्वारा दी गई।

संपादकीय

कोरोना काल में परीक्षाएं और छात्रों का भविष्य

शिक्षा हमारा संवैधानिक अधिकार है। इसे न तो कोई छीन सकता है और न ही कोई थोप सकता है। शिक्षा बोझ और तनाव की अवस्था नहीं है। शिक्षा औसत व्यक्ति के सामाजिकए मानसिक विकास के लिए अनिवार्य है। शिक्षा ही भविष्य का भारत तय करती है। जिन परीक्षाओं को लेकर हंगामा बरपा हैए राजनीतिक पाले भी खिंचे हैं। बेशक छात्रों में भी एक स्वाभाविक तनाव और चिंता के भाव हैंगेए उन परीक्षाओं को ही जिंदगी नहीं माना जा सकता। नीट और जेईई की परीक्षाएं ही जिंदगी और लक्ष्य निर्धारित नहीं कर सकतीं। अलबत्ता वे जरिया जरूर हैं। जिन आंखों में एक योग्य डॉक्टर और एक कुशल इंजीनियर बनने के सपने तैरते रहे हैं, उन्हें एक परीक्षा ही कुंद नहीं कर सकती। ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज सरीखे विश्वविख्यात शिक्षण संस्थानों ने भी कोरोना वायरस जैसी वैश्विक महामारी के मद्देनजर परीक्षाएं स्थगित की हैं। सरकार परीक्षा के लिए अड़ नहीं सकती, क्योंकि इस सरकार को युवाओं का ही भरपूर समर्थन मिला था। देश में कोरोना की भयावह स्थिति है। एक ही दिन में 75,000 से अधिक मरीज सामने आए हैं।

संक्रमण का कुल आंकड़ा 33 लाख को पार कर गया है और मौतें 60,000 को लांघ गई हैं। यकीनन यह अभूतपूर्व स्थिति है। दो गज की दूरीए मास्क और हाथों की बार-बार सफाई 'कागजी उपदेश' हैं। यदि सरकार के मंत्री वेशभूषा और चेहरा-मोहरा बदल करए अपने-अपने क्षेत्रों मेंए कुछ दिन घूम-फिर आएं, तो पौराणिक कथाओं की तरह यथार्थ सामने आ जाएगा। गली, बाजार, मंडी, संस्थान, दफ्तर या कोई भी आयोजन हो, कोरोना के प्रति सभी निश्चिंत लगेंगे। लगता है, वे महामारी के जानलेवा संक्रमण से परिचित नहीं हैं या उन्हें मौत की परवाह नहीं है! देश के 11 राज्यों में बाढ़ से 1100 से ज्यादा मौतें हो चुकी हैं। इलाके कटे-फटे हैं, सड़कें और पुल ध्वस्त हैं। ऐसे हालात में रेल या बस सरीखे सार्वजनिक परिवहन की कल्पना ही की जा सकती है अथवा सरकारी दावे ही सुने जा सकते हैं। यहां ऐसे दावों को चुनौती कौन दे सकता है? प्रवासी मजदूर और उनके परिवारों की हर तरह की मदद फिल्म अभिनेता सोनू सूद न करते, तो आज भी राजमार्गों या रेलवे पटरियों पर पैदल चलते 'निरीह भारतवासी' देखने को मिल सकते थे! सरकारें ऐसे हालात में सहयोग क्यों नहीं करतीं या क्यों नहीं पसीजतीं? हैरानी है! ऐसे ही माहौल में कोई परीक्षार्थी परीक्षा-केंद्र तक समयानुसार नहीं पहुंच पाया या वह और उसके मां-बाप कोरोना से संक्रमित हो गए, उसके बाद घर, गली, समाज और शहर-जिला में भी संक्रमण फैलता गया, तो जिम्मेदारी किसकी होगी?

काम की बात

इस जीवन का पैसा अगले जन्म मे काम नही आता मगर इस जीवन का पुण्य जन्मो-जन्मो तक काम आता है।

एक सलाह

लफ्जों के दांत नहीं होते, पर ये काट लेते है। दीवारें खड़े किए बगैर बांट देते है।

क्या भारत जंग की स्थिति में चीन -पाक को एक साथ देख लेगा

भारत और चीन सीमा पर तनाव अभी बरकरार ही है और भारत-पाकिस्तान के बीच भी गोला-बारूद चल ही रहे हैं। यानी भारत फिलहाल अपने दो घोर शत्रु देशों का सरहद पर एक साथ प्रतिदिन ही सामना कर रहा है। ये दोनों देश बार-बार साबित कर चुके हैं कि ये सुधरने वाले तो हरगिज ही नहीं है। आप इनसे मैत्रीपूर्ण संबंधों की अपेक्षा कर ही नहीं सकते। इनके डीएनए में ही भारत विरोध है। तो साफ है कि भारत को अपने इन पड़ोसी मुल्कों की नापाक हरकतों का मुकाबला करने के लिए तो हर वक्त चौकस रहना ही होगा।

अटल बिहारी वाजेपयी बार-बार कहा करते थे कि 'आप अपने मित्र बदल सकते हैं, पर दुर्भाग्य से पड़ोसी नहीं।' बात यहीं पर समाप्त नहीं होती। ये दोनों दुश्मन देश एक-दूसरे के घनिष्ठ मित्र भी हैं। कम से कम ऊपर से देखने में तो यही लगता है। हालांकि, कूटनीति में कोई देश किसी का स्थायी मित्र या शत्रु तो नहीं होता। यह भी संभव है कि भारत से खुंदक ही इन्हें करीब लाती हो। तो क्या अगर अब कभी भारत का चीन के साथ युद्ध हुआ, तो पाकिस्तान भी मैदान में खुलकर आएगा चीन के हक में? इसी के साथ अगर पाकिस्तान का भारत के साथ युद्ध हुआ तो चीन भी अपने मित्र देश पाकिस्तान के हक में लड़ेगा? यह सवाल वर्तमान में महत्वपूर्ण हो चुके हैं। पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह जी सार्वजनिक रूप से कह रहे हैं कि अगर भारत-चीन युद्ध छिड़ता है तो पाकिस्तान शांत नहीं बैठेगा। वह भी चीन के हक में लडेगा। चूंकि अमरिंदर सिंह सैन्य मामलों के गहन जानकार हैं, इसलिए उनकी चेतावनी को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

सीमा पर शांति दूर की संभावना

जरा देखें कि एक तरफ कुछ दिन पहले ही लद्दाख की गलवान घाटी में भारत-चीन के सौनिकों के बीच कसकर संघर्ष हुआ था। उसके बाद से ही सीमा पर शांति एक दूर की संभावना सी बनी हुई है। हालांकि दोनों पक्ष बातचीत भी कर रहे हैं, ताकि माहौल शांत हो जाए, पर यह तो मानना ही होगा कि बातचीत के नतीजे फिलहाल तो कोई बहुत सराकात्मक सामने नहीं आए हैं।

चीन के साथ चल रहे सीमा विवाद पर भारत के चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल बिपिन रावत ने 24 अगस्त को कहा कि 'लद्दाख में चीनी सेना के अतिक्रमण से निपटने के लिए सैन्य विकल्प भी है। लेकिन, यह तभी अपनाया जाएगा जब सैन्य और कूटनीतिक स्तर पर वार्ता विफल रहेगी।' रावत के बयान से आम हिन्दुस्तानी आशवस्त हो सकता है कि भारत किसी भी स्थिति के लिए तैयार है। रावत ने जो कहा उसमें कुछ भी गलत नहीं लगा। यह एक सधा हुआ बयान है। भारत की रक्षा तैयारियां युद्ध स्तर पर हैं। भारत को तो अब फ्रांस से 5 राफेल विमान मिल चुके हैं जो अति शक्तिशाली युद्ध क्षमता से संपन्न हैं।

जंग के लिए कितना तैयार भारत

फ्रांस से खरीदे गए बेहद आधुनिक और शक्तिशाली 36 राफेल विमानों की पहली खेप भारत आ चुकी है। निश्चित रूप से राफेल लड़ाकू विमानों का भारत में आना हमारे सैन्य इतिहास में नए युग का श्रीगणेश है। इन बहुआयामी विमानों से वायुसेना की क्षमताओं में क्रांतिकारी बदलाव आएंगे। राफेल विमान का उड़ान के दौरान प्रदर्शन श्रेष्ठ है। इसमें लगे हथियार, राडार एवं अन्य सेंसर तथा इलेक्ट्रॉनिक युद्धक क्षमताएं लाजवाब माने जाते हैं। कहना न होगा राफेल के आने से भारतीय वायुसेना को बहुत ताकत मिली है।

आप इसे यूं समझ सकते हैं कि हमारी रक्षा तैयारियां सही दिशा में है। इसलिए भगवान न करें कि अगर चीन के साथ युद्ध की नौबत आई, तो इस बार चीन के गले को दबा देने के पुख्ता इंतजाम भारतीय सेना के पास हैं। पर सवाल वही है कि क्या तब पाकिस्तान भी युद्ध में कूद पड़ेगा? अगर हम पीछे मुड़कर देखें तो 1962 में चीन के साथ हुई जंग के समय पकिस्तान भी उसके हक में लड़ना चाह रहा था। पर वहां शिखर स्तर पर इस बाबत कोई सर्वानुमति नहीं बनने के कारण वह मैदान में नहीं आया। उधर, पाकिस्तान ने भारत पर 1965, 1971 और फिर कारगिल में हमला बोला तो चीन भी तटस्थ ही रहा।

वैसे उसने हमला तो 1948 में भी किया था। पर तब की दुनिया अलग थी। कहते हैं कि 1965 में पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान और उनके विदेश मंत्री जुल्फिकार भुट्टों को उम्मीद थी कि चीन उनके हक में आएगा, पर यह नहीं हुआ। पाकिस्तान ने कच्छ में अपनी नापाक हरकतें चालू कर दी थीं। पाकिस्तान के अदूरदर्शी सेना प्रमुख मूसा खान ने कच्छ के बाद कश्मीर में घुसपैठ चालू कर दी। वो भारत को कच्छ और कश्मीर में एक साथ उलझाना चाहता था। लेकिन, भारतीय सेना ने उसकी कमर ही तोड़ दी। भारतीय सेना के कब्जे से बहुत दूर नहीं था लाहौर। यानी कश्मीर पर कब्जा जमाने की चाहत रखने वाला पाकिस्तान लाहौर को ही खोने वाला था।

भारत ने पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) से करीब आठ किलोमीटर दूरी पर स्थित हाजी पीर पास पर अपना कब्जा जमा लिया था। भारत ने 1971 की जंग में पाकिस्तान को तो दो फाड़ ही कर के रख दिया था और कारगिल में भी उसकी कसकर धुनाई की थी। इन दोनों मौकों पर चीन ने अपने मित्र के हक में भारत से पंगा लेने से बचना ही सही माना था।

हालांकि यह भी सच है कि 1971 से अब तक वैशिवक स्तर पर दुनिया का चेहरा-मोहरा बहुत बदल चुका है। चीन पर पाकिस्तान की निर्भरता का आलम यह है कि वह चीन में लाखों मुसलमानों पर रोज हो रहे अत्याचारों को लेकर जुबान तक नहीं खोलता। उसे भय सताता है कि कहीं चीन उससे नाराज ना हो जाए। पाकिस्तान को लंबे समय से मुंहमांगी मदद देने वाले सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरत ने भी पाकिस्तान से पूरी दूरियां बना ली है।

आरके सिन्हा

पिछले साल जब सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान ने इस्लामाबद का दौरा किया, तो संकट में फंसे पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था के लिए 20 अरब डॉलर के समझौतों पर हस्ताक्षर हुए और ऐसा लगा कि सऊदी अरब और पाकिस्तान के ऐतिहासिक रिश्तों को नया आयाम मिल गया है। लेकिन, हाल ही में दोनों देशों में दूरियां इसलिए हुई, क्योंकि सऊदी अरब कश्मीर के मसले पर पाकिस्तान के हिसाब से नहीं चला।

पाकिस्तान को उम्मीद थी कि भारत ने जब जम्मू-कश्मीर का विशेष राज्य का दर्जा खत्म किया तो सउदी अरब उसके साथ भारत की निंदा करेगा, पर यह नहीं हुआ। जबकि चीन उसके साथ रहा। इसलिए कहा जा रहा है कि अगर अब भारत का चीन से युद्ध हुआ तो पाकिस्तान उसके साथ खुलकर आ जाएगा। इस आशंका के आलोक में भारत को अपनी रक्षा तैयारियों को और चाक-चौबंद रखना होगा।

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तभकार और पूर्व सांसद हैं)

चाणक्य नीति

बुद्धिमान व्यक्ति को ऐसे देश में कभी नहीं जाना चाहिए जहाँ: रोजगार कमाने का कोई माध्यम ना हो, जहां लोगों को किसी बात का भय न हो, जहां लोगों को किसी बात की लज्जा न हो, जहां लोग बुद्धिमान न हो, और जहाँ लोगों की वृत्ति दान धरम करने की ना हो।

अच्छे विचारों को सदैव जागृत रखें

अच्छे विचार, अच्छी आदतें और शुभ संकल्प ग्रहण करना व्यक्ति के वश की बात है। मनुष्य इन वृत्तियों को सामान्य रूप से ग्रहण करता रहता है। उसके अन्दर प्रारंभ से ही इस तरह की वृत्तियां जाग्रत अवस्था में रहती हैं। अन्य प्रवृत्तियाँ भी मनुष्य के अंदर उपस्थित रहती हैं परंतु अच्छी प्रवृत्तियों के कारण वे दबी रहती हैं। बाहर के दोष-दुर्गुणों को भी अंदर शुभ प्रवृत्तियाँ आने नहीं देती। लेकिन इसके बाद भी मनुष्य में दोष - दुर्गुण पाए जाते हैं। वे तभी स्थान व अवसर पाते हैं जब शुभ प्रवृत्तियाँ सो जाती हैं। इसलिए मनुष्य को सदैव अच्छी प्रवृत्तियों को जाग्रत रख कर बाहर से और अच्छे गुणों को ग्रहण करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

परीक्षाओं का विरोध:शुद्ध नौटंकी

डॉ. वेद प्रताप वैदिक

कांग्रेस-अध्यक्ष सोनिया गांधी ने अपने संकट से उबरने के बाद जो यह पहला कदम उठाया है, उसका समर्थन नहीं किया जा सकता। उन्होंने सात राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ बात की और कहा कि 'जेईई' और 'एनईईटी' की परीक्षाएं स्थगित की जाएं। इन दोनों प्रवेश-परीक्षाओं में लगभग 25 लाख छात्र बैठते हैं।

इन सात मुख्यमंत्रियों में से चार कांग्रेस के हैं। दो मुख्यमंत्री कांग्रेस की मदद से अपनी कुर्सी पर हैं। 7 वीं मुख्यमंत्री ममता बनर्जी हैं। ये सातों सोनिया जी की हां में हां मिलाएं, यह स्वाभाविक है। दिल्ली की 'आप' सरकार और तमिलनाडु की बीजेपी समर्थित सरकार भी इन परीक्षाओं के पक्ष में नहीं हैं।

इन सरकारों का मुख्य तर्क यह है कि कोरोना की महामारी के दौरान ये परीक्षाएं देश में बड़े पैमाने पर रोग फैला सकती हैं। इन प्रांतीय सरकारों की यह चिंता स्वाभाविक है लेकिन इनसे कोई पूछे कि यह चिंता क्या विश्वविद्यालय अनुदान आयोग या शिक्षा मंत्रालय या सरकार को नहीं होगी? उन्हें तो विपक्षियों से भी ज्यादा होगी। इसीलिए उन्होंने परीक्षा के लिए बेहतरीन इंतजाम किए हैं।

'जेईई' की परीक्षाएं 660 और 'एनईईटी' की परीक्षाएं 3842 केंद्रों पर होंगी। इन केंद्रों पर परीक्षार्थियों के लिए शारीरिक दूरी रखने, मुखपट्टी लगाने, जांच आदि का कड़ा इंतजाम होगा। 99 प्रतिशत छात्रों के लिए वे ही परीक्षा-स्थल तय किए गए हैं, जो उन्होंने पसंद किए हैं। जिन्हें दूर-दराज के केंद्रों में जाना है, उनके केंद्र बदलने की प्रक्रिया भी जारी है।

इसके अलावा छात्रों की यात्रा और रात्रि-विश्राम की व्यवस्था भी कुछ राज्य सरकारें कर रही हैं। ऐसी स्थिति में इन परीक्षाओं को स्थगित करने की मांग कहां तक जायज है? यदि ये परीक्षाएं स्थगित हो गई तो लाखों छात्रों का पूरा एक वर्ष बर्बाद हो जाएगा। जो फीस उन्होंने भरी है, वह राशि बेकार हो जाएगी। जब देश में रेलें और बसें चल रही हैं, मेट्रो खुलनेवाली हैं, मंडियां और बड़े बाजार खुल रहे हैं तो परीक्षाएं क्यों न हो?

यह बात एक याचिका पर बहस के दौरान सर्वोच्च न्यायालय ने भी पूछी है। अब यदि ये सातों राज्य फिर से अदालत की शरण में जाएंगे तो वह शुद्ध नौटंकी ही होगी। उसका नतीजा क्या होगा, यह उनको पता है। विपक्षी मुख्यमंत्रियों और कांग्रेस-नेताओं का यह कदम उन्हें लाखों छात्रों और उनके अभिभावकों से अलग करेगा। विपक्ष अपने ही पांव पर कुल्हाड़ी क्यों मार रहा है?

जीवन का प्राकृत स्वरूप ही उत्सव है

अनिल त्रिवेदी
लेखक

जीवन क्या है? क्या नहीं है? यह तय करना सरल भी है! और चुनौती पूर्ण भी है! एक समझ यह भी है कि जीवन केवल जीवन है, उससे कम या ज्यादा, कुछ भी नहीं। पर यह तो बात को बढ़ने ही नही देना है या शुरू होते ही खत्म करना है। जीवन सनातन होकर निरन्तरता का एक ऐसा सिलसिला है, जो जन्म और मृत्यु का नियन्ता है। जन्म, जीवन के अंश जीव का साकार होना है और मृत्यु, जीव का निराकार में लीन हो जाना है। इस तरह जीवन को सागर की लहरों की तरह जीव के साकार से निराकार होने का अंतहीन सिलसिला भी मान सकते है। जीव के लिए जीवन सबसे महत्वपूर्ण समय है, जिसके समाप्त होते ही, जीव का साकार स्वरूप भी अनन्त में व्याप्त हो जाता है। जीव, जीवन की महत्ता और उसके साकार स्वरूप का दीवाना है। इस कारण जीव की मूल चाहना प्रायः यह होती है कि, वह साकार स्वरूप में रहे, अनन्त निराकार में जल्दी न समाए। शायद हममें से अधिकतर, जीव के प्राकृत स्वरुप में स्वयं तक ही सीमित न रहकर, जीवन में हर प्रसंग का उत्सव मनाना चाहते हैं। प्रतिदिन सोना, जागना, उठना, घुमना, खाना पीना, कमाना आदि। शायद रोजमर्रा की एकरसता को बदलने के लिए हम सब जीवन के हर प्रसंग में, सदैव कुछ न कुछ उत्सव करने की, सहज चाहना रखते है। इसका नतीजा यह है कि हममे से कई मनुष्यों को यह लगता है कि, बिना उत्सव का जीवन भी कोई जीवन है, पर यह भी वस्तुस्थिति है कि मनुष्य के अलावा कोई अन्य जीव मनुष्यों जैसा उत्सव नहीं मनाते हैं। उन सबका जीवनक्रम ही एक तरह से उत्सव हैं। मनुष्येतर जीवो की अपनी भावाभिव्यक्ति तो हम महसूस कर पाते है पर मनुष्य द्वारा सृजित उत्सव परम्परा पर मनुष्यों का एकाधिकार जैसा लगता है, पर वास्तविकता में ऐसा है नहीं। मनुष्येतर जीवन में उत्सव की अभिव्यक्ति का ढंग निराला है। उसे देखने के लिए एक अलग अनुभूति और उत्सवदृष्टि होना जरूरी है।

जीवन के रुप स्वरूप, आकार प्रकार और जीवन चक्र में बहुत अधिक विविधतापूं है। मनुष्य के अलावा जीवन के उत्सव की अभिव्यक्ति देखने या अनुभव करने के लिए जीवन की अभिव्यक्तियों को देखपाने के लिए एक दृष्टा भाव और अनुभूतिमय धीरज जरूरी है। मनुष्येत्तर उत्सव परम्परा का एक निश्चित प्राकृतिक क्रम है वह मनुष्य की तरह सुविधानुसार और सकारण किसी निमित्तानुसार नहीं होता। जैसे वसन्त ऋतु में आम पर मौर आना या आम का बौराना आम के उत्सव का प्रारम्भ है। आम पर फल आने की शुरूआत छोटी-छोटी केरियो से लेकर लटालूम आमों से पेड़ का लद जाना, आम की उत्सवधर्मिता का चरम है। छोटे-बड़े बच्चों से लेकर कई तरह के पक्षियों का 'आम फल उत्सव' में अधिकारपूर्वक भागीदारी करना, यह सब आमवृक्ष की उत्सव परम्परा की धीर-गंभीर प्राकृतव्यवस्था का हम सबको अहसास कराता है। आम के मौरो पर मंडराने वाली मधुमक्खियां उत्सव की शुरुआत में ही उत्सव के सानन्द समापन की आधारभूमि तय कर देती हैं। कभी किसी वर्ष आम के पेड़ पर मौर नहीं आते और उस साल केवल नए-नए पत्ते ही आते हैं और नए पत्तों को पतझड़ आने तक बिना किसी उत्सव या चहल-पहल के ही, सूनेपन के सानिध्य से ही संतोष करना होता है।

हरसिंगार पर जो फूलों की बहार आती है तो हर सुबह अपनी आधार भूमि को हरसिंगार अपने पुष्पो की चादर ओढ़ाकर, जीवनदात्री धरती का अभिनन्दन करता है। हरितिमा से सराबोर गेहूं और धान के खेतों में उत्सव की शुरूआत बालियों की बारात निकलने से होती है जो तो मक्का, जुवार, बाजरा के भुट्टों का आगमन अनाज उत्सव की शुरूआत कर छोटी बड़ी चिड़ियाओं को भोजन उत्सव का खुला मौन निमंत्रण दे देता है। ठंड की शुरूआत होते ही न जाने कितने रंग-बिरंगे फूलों के खिलने पर रंग-बिरंगी तितलियों को अपने आसपास निरन्तर अटखेलियां कर, तितलियों का उड़ान उत्सव अपने आप समूची अवनी और अम्बर को रंगीन बना देता है। तरह-तरह की सुगंधों से सराबोर मोगरा, चमेली, रातरानी जैसे छोटे-छोटे फूल सारे वातावरण में खुशनुमा खुशबू व्याप्त कर उत्सव की सूचना हर दिशा में फैला देते है। ठण्ड की बिदाई और गर्मी का आगमन सारे उत्सवों को संन्यास परम्परा की ओर धकेल देता है। सन्नाटे की कड़ी धूप में जीवन की सारी चहल-पहल एकाकार कर मौन को मुखर कर देता हैं। गर्मी में झुलसा हुआ सूखा जीवन, बारिश की बूंदों के स्पर्श मात्र से, अलसाये सुप्त जीवन को, सबकहीं नए उत्सव के आगमन सूचना देने को आतुर हो, धरती में चारोओर व्याप्त सूखे संन्यास के प्रतीक गेरूआ रंग को फिर से कल-कल बहती छोटी बड़ी नदियों के पानी में, अपने अल्पकालीन ग्रीष्मावकाशी गेरूआ रंग रूपी संन्यास को धोकर, उसे अनन्त जल में प्रवाहित करते हुए, धरती के जीवन में हरियाली और खुशहाली के नये उत्सव की उद्घोषणा करता है। बरखा की बूंदें जीवन ही उत्सव है यह संदेश दे धरती के हर कण में बदलाव का नयादौर, जीवन के नए नए अंकुरों का उदय कर पुनरूजीवन उत्सव मे भागीदार बनने का अवसर देता है। हम सब जो जीवन के किसी न किसी रुप में इस धरती पर जीव के रुप में व्यक्त हुए है। हम सब चाहे न चाहे, माने न माने हम सबका जीवन ही उत्सव है। तभी तो जीव मात्र की उत्सवधर्मिता जीवन भर गतिशील रहकर इस धरती में जीवन को सतत प्रवाहमय बनाए हुए है। इसी से हर समय सहज प्राकृत स्वरूप में उत्सव, हमे और हमारी धरती के सभी जीवो के, जीवन के सनातन क्रम को, हर क्षण नए जीवनचक्र में आगे बढ़ाते है और जीवन के उत्सव प्रसंगों से, जीवन का क्रम तथा अर्थ समझाते रहते है। इसी से जीवन और उत्सव हमारे जीवन में सनातन रूप से रचे बसे है। तभी तो हमारी धरती पर सारे जीवों का जीवन ही उत्सव है। जीवन को उत्सव कहना तो सरल है पर जीवन भर मनुष्यों का मन आशा निराशा, राग और द्वेष, लोभ लालच और सत्य-असत्य के आसपास ही घूमता रहता है। मनुष्येत्तर जीवन में यह सब मौजूद नहीं हैं, जीवन अपने प्राकृत स्वरूप में ऊर्जा की जैविक अभिव्यक्ति है। जिसमें मूलतरू जीवन की जीवन्त हलचले ही होती है। जीवन की जीवन्त हलचले ही उत्सवों का सृजनात्मक स्वरूप है जो सारे जीवों में भिन्न-भिन्न रूपों में निरन्तर अभिव्यक्त होता है।

ईर्ष्या से इतनी पीड़ा क्यों होती है?

ईर्ष्या तुलना है। और हमें तुलना करना सिखाया गया है, हमनें तुलना करना सीख लिया है, हमेशा तुलना करते हैं। किसी और के पास ज्यादा अच्छा मकान है, किसी और के पास ज्यादा सुंदर शरीर है, किसी और के पास अधिक पैसा है, किसी और के पास करिश्माई व्यक्तित्व है। जो भी तुम्हारे आस-पास से गुजरता है उससे अपनी तुलना करते रहो, जिसका परिणाम होगा, बहुत अधिक ईर्ष्या की उत्पत्तिय यह ईर्ष्या तुलनात्मक जीवन जीने का बाइ प्रोडक्ट है।

अन्यथा यदि तुम तुलना करना छोड़ देते हो तो ईर्ष्या गायब हो जाती है। तब बस तुम जानते हो कि तुम तुम हो, तुम कुछ और नहीं हो, और कोई जरूरत नहीं हैं। अच्छा है तुम अपनी तुलना पेड़ों के साथ नहीं करते हो, अन्यथा तुम ईर्ष्या करना शुरू कर दोगे कि तुम हरे क्यों नहीं हो? और अस्तित्व तुम्हारे लिए इतना कठोर क्यों है? तुम्हारे फूल क्यों नहीं हैं? यह अच्छा है कि तुम अपनी तुलना पक्षियों, नदियों, पहाड़ों से नहीं करते हो, अन्यथा तुम्हें दुख भोगना होगा। तुम सिर्फ इंसानों के साथ तुलना करते हो, क्योंकि तुमने इंसानों के साथ तुलना करना सीखा हैय तुम मोरों और तोतों के साथ तुलना नहीं करते हो। अन्यथा तुम्हारी ईर्ष्या और भी ज्यादा होगी: तुम ईर्ष्या से इतना दबे होंगे कि तुम थोड़ा भी नहीं जी पाओगे।

तुलना बहुत ही मूर्खतापूर्ण वृत्ति है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अनुपम और अतुलनीय है। एक बार यह समझ तुम में आ जाए, ईर्ष्या गायब हो जाएगी। प्रत्येक अनुपम और अतुलनीय है। तुम सिर्फ तुम हो: कोई भी कभी भी तुम्हारे जैसा नहीं हुआ, और कोई भी कभी भी तुम्हारे जैसा नहीं होगा। और न ही तुम्हें भी किसी और के जैसा होने की जरुरत है।

प्रणव दा का जाना

भारतीय राजनीति में प्रणब मुखर्जी हर किसी के लिए सम्मान का प्रतीक थे। प्रणब दा को भारतीय राजनीति में एक विद्वान चरित्र के रूप में सम्मान हासिल रहा। प्रणब दा के पास इतिहास, राजनीतिक शास्त्र और कानून की डिग्रियां थीं। क्लर्क, पत्रकार और टीचर के तौर पर काम किया। फिर 1969 में पिता के नक्श-ए-कदम पर चलते हुए राजनीति में आ गए। वर्ष 2008 में उन्हें पद्म विभूषण और 2019 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया। प्रणब के राजनीतिक करियर में तीन बार ऐसे मौके आए, जब लगा कि प्रधानमंत्री वे ही बनेंगे, लेकिन तीनों बार प्रणब दा प्रधानमंत्री नहीं बन सके। इंदिरा गांधी के आग्रह पर प्रणब दा पहली बार राज्यसभा के रास्ते संसद पहुंचे थे। इंदिरा गांधी राजनीतिक मुद्दों पर प्रणब की समझ की कायल थी। यही वजह थी कि इंदिरा ने प्रणब दा को कैबिनेट में नंबर दो का दर्जा दिया। यह इसलिए भी खास है क्योंकि कैबिनेट में आर. वेंकटरामन, पीवी नरसिम्हाराव, ज्ञानी जैल सिंह, प्रकाशचंद्र सेठी और नारायण दत्त तिवारी जैसे कद्दावर नेता थे।

इंदिरा गांधी की हत्या के बाद अगले प्रधानमंत्री के रूप में प्रणब का नाम भी चर्चा में था, पर पार्टी ने राजीव गांधी को चुना। 1991 में राजीव गांधी की हत्या के बाद चुनाव में कांग्रेस की सत्ता में वापसी हुई। माना जा रहा था कि इस बार प्रणब के मुकाबले कोई दूसरा चेहरा पीएम पद का दावेदार नहीं है, लेकिन इस बार नरसिम्हा राव को प्रधानमंत्री बनाया गया। प्रणब को पहले योजना आयोग का उपाध्यक्ष और फिर 1995 में विदेश मंत्री बनाया गया। 2004 में प्रणब मुखर्जी का नाम फिर चर्चा में था, लेकिन सोनिया गांधी ने जाने माने अर्थशास्त्री मनमोहन सिंह को प्रधानमंत्री पद के लिए चुना। भले ही प्रणब का नाता कांग्रेस से था, लेकिन वे भाजपा के दो नेताओं अटल बिहारी वाजपेयी और नरेंद्र मोदी से काफी प्रभावित थे। अटलजी को प्रणब सबसे असरदार, तो नरेंद्र मोदी को सबसे तेजी से सीखने वाला पीएम मानते थे। यहीं नहीं, प्रधानमंत्री मोदी ने भी प्रणब मुखर्जी की तारीफ में कहा था कि जब मैं दिल्ली आया था, तब प्रणब दा ने ही उंगली पकड़कर सिखाया।

प्रणब दा अपने फैसले पर कायम रहने वाले लोगों में से एक थे। उनकी यह झलक 7 जून 2019 में संघ के समारोह में शामिल होने पर दिखी थी। अलग विचारधारा के होने के बाद भी उन्होंने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया था। उनके इस फैसले पर कांग्रेस नेताओं ने भी सवाल उठाए थे। उनकी बेटी ने भी अपने पिता से अपील की कि वो न जाएं। लेकिन प्रणब दा आरएसएस के कार्यक्रम में नागपुर पहुंचे। वहां उन्होंने आरएसएस के संस्थापक डॉक्टर हेडगेवार को बड़ी शिद्दत से याद किया, जो हिंदुओं का सबसे बड़ा सगठन खड़ा करने से पहले कांग्रेस के नेता थे। संघ के कार्यक्रम में प्रणब दा गए तो जरूर लेकिन संघ की एक परंपरा भी उनकी वजह से टूटी। संघ में किसी मुख्य अतिथि के बोलने के बाद सरसंघचालक का भाषण होता है लेकिन प्रणब मुखर्जी के मामले में वो परंपरा टूट गई। वहां भी प्रणब दा ने धर्मनिरपेक्षता के अपने मूल्यों की अलख जगा दी। प्रणब दा ने लोकतंत्र को मजबूत बनाने में संवाद की भूमिका को हमेशा तवज्जो दी। वही भूमिका उनको अपने समकालीन नेताओं से अलग करती थी।

सिद्धार्थ शंकर

क्या 'स्वर्ग' पर कब्जा कर पाएगें नरेन्द्र...?

ओमप्रकाश मेहता लेखक

भारत पर पिछले पचहत्तर महीनों से राज कर रही भारतीय जनता पार्टी की भारी प्राथमिकताओं में पहली प्राथमिकता। इस धरती के 'स्वर्ग' याने जम्मू-कश्मीर पर राज करना है, फिलहाल वहाँ करीब एक साल से राष्ट्रपति शासन है, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जम्मू-कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा देने वाली धारा-370 को हटाकर जम्मू-कश्मीर और उसके पूर्व अंग लद्दाख को केन्द्र शासित राज्य घोषित किया है। आजादी के बाद का एक जमाना था, जब जम्मू-कश्मीर का अलग प्रधानमंत्री हुआ करता था और राज्य के वरिष्ठ नेता फारूख अब्दुल्ला के वालिद मरहूम शेख अब्दुल्ला उस पद को सुशोभित कर चुके, उसके बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने इस राज्य का विशिष्ट दर्जा खत्म कर उसे 370 का झुनझुना पकड़ाया था, जिसके तहत इस राज्य को देश के अन्य राज्यों की अपेक्षा कई विशेष सुविधाएँ प्राप्त थी, पिछले वर्ष पाँच अगस्त को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस राज्य से धारा-370 हटाकर इस राज्य को अन्य केन्द्रशासित राज्यों की पंक्ति में खड़ा कर दिया, इस आकांक्षा को अंजाम देने से पहले वहाँ की नब्ज टटोलने के लिए भाजपा पहले वहाँ की मेहबूबा मुफ्ती की सरकार का अंग बनी और उसके बाद मुफ्ती सरकार से समर्थन वापस लेकर वहाँ राष्ट्रपति शासन कायम कर धारा-370 हटाई और उस राज्य को केन्द्रशासित राज्य घोषित किया।

यदि हम जम्मू-कश्मीर का राजनीतिक इतिहास देखें तो जम्मू और कश्मीर में कई पृथकताएं है, जम्मू में जहां हिन्दुओं का बाहुल्य है, वहीं कश्मीर में मुसलमानों का बहुमत है, इसी कारण पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा को जम्मू क्षेत्र से दो तिहाई से अधिक सीटें मिली थी, जबकि कश्मीर से उसे एक भी सीट प्राप्त नहीं हुई थी और जम्मू से प्राप्त सीटों के आधार पर ही वह मेहबूबा सरकार की हिस्सेदार बनी थी, किंतु अब धारा-370 हटाने और विशेष राज्य का दर्जा खत्म करने के बाद भाजपा कुछ ऐसा राजनीतिक दाव चलना चाहती है, जिससे कि कश्मीर के निवासी 370 हटाने की पीड़ा को भूल जाएँ और भाजपा के रंग में रंग जाएं? किंतु कश्मीर की जमीन से जुड़ी स्थानीय राजनीतिक पार्टियाँ पीडीपी और नेशनल कांफ्रेन्स अपने सार्वजनिक प्रचारों से धारा-370 की बार-बार याद दिला रही है और कश्मीर की आवाम को उसे भूलने नहीं दे रही है।

यद्यपि भारतीय जनता पार्टी कश्मीरियों के जिस दर्द को भुला देना चाहती है, उस दर्द की दवा से पूरा देश खुश है, अर्थात् धारा-370 हटाने वाले कदम का पूरे देश ने तहदिल से स्वागत किया है, किंतु कश्मीर की जनता न तो उसे भूला पा रही है और न वहाँ के राजनेता उसे भूलने दे रहे है, यही नहीं वहाँ की प्रमुख पार्टी नेशनल कांफ्रेन्स के शीर्ष नेता फारूख अब्दुल्ला ने तो यहां तक कह दिया कि ''अगर भाजपा को कश्मीरियों का दिल जीतना है तो उसे धारा-370 लौटानी होगी, अर्थात उसे फिर बहाल करना होगा, वर्ना कश्मीर की जनता भाजपा को कभी माफनहीं करेगी।''

इसी कारण अब भाजपा में शीर्ष स्तर पर गंभीर चिंतन चल रहा है कि कश्मीर में अब ऐसे कौन से सार्थक व वजनदार कदम उठाए जाएं जिससे कि कश्मीरी भाजपा के साथ खड़े हो सके। जहां तक कश्मीर के प्रमुख वोटरों का एक अंश कश्मीरी पंडित जिन्हें तीन दशक पूर्व कश्मीर से बाहर जाने को मजबूर कर दिया गया था, उन्हें मोदी जी ने सत्ता में आने के तत्काल बाद आश्वस्त ही नहीं किया था, बल्कि भाजपा ने अपने चुनावी घोषणा-पत्र में भी कश्मीरी पंडितों की, कश्मीर वापसी का वादा किया था, किंतु मोदी जी ने अपने साढ़े छः साल के शासन के बाद भी उनकी वापसी नहीं करवाई, इसलिए वे सब कश्मीरी पंडित भी नाराज है।

कश्मीर में वहां के सियासी दलों द्वारा धारा-370 का चुनावी मुद्दा बना लिये जाने के बाद अब भाजपा ने यह तय किया कि वह पूरे देश में धारा-370 खत्म करने का महत्व बताएगी, किंतु भाजपा यह क्यों नहीं समझ पा रही है कि इस मुद्दें पर पूरा देश तो उसके साथ ही है, उसे तो कश्मीर के आवाम को समझाना है। इसलिए वहां उसे इस अभियान को सार्थक तरीके से चलाना है, सिर्फ अपनी पार्टी का उप-राज्यपाल वहां तैनात कर देने से काम थोड़े ही चलेगा, इसके लिए वहां भाजपा को स्थानीय नेताओं के विरोध के बावजूद अलख जगानी पड़ेगी तब जाकर धरती के इस स्वर्ग पर नरेन्द्र की ध्वजा लहरा सकेगी, क्योंकि वहां राष्ट्रपति शासन भी आखिर कब तक कायम रखा जा सकता है? लोकप्रिय सरकार की स्थापना तो संवैधानिक मजबूरी भी है।

राहुल गांधी की वजह से कांग्रेस डूब रही है...!

कांग्रेस पार्टी एक बार फिर से वेंटीलेटर पर जा पहुंची है। आखिर कांग्रेस में ये क्या हो रहा है। सिर्फ सत्ता के लिए कांग्रेस संतरे की तरह आपस में चिपकी रहती है या फिर सत्ता का चरित्र ही हर तरफ ऐसा देखा जाता है। गांधी, नेहरू, पटेल, मौलाना की पार्टी जिसने देश को आजाद कराया उसका ये हाल होना करोड़ों उसके चाहने वालों को दुखी बना रहा है। असल में लग रहा है कांग्रेस को उसका जातिवाद कहें या ऊँची जाति वालों की तानाशाही खोखला करती देखी जा रही है। इन्दिरा जी के दौर 1977-80 में जब उन्हें गिरफ्तार किया गया था शाह आयोग की सिफारिश पर तब यूपी के एक पाण्डे नामक युवक ने एक हवाई जहाज का अपहरण करके उन्हें छोड़ने की मांग उठाई थी। इनाम के तौर पर पाण्डे को राज्यसभा टिकट दिया गया था। कुछ लोग बता रहे हैं वो विधायक बनाये गये थे।

उत्तर प्रदेश व बिहार में पार्टी को इन्दिरा जी गलत नीतियों व राजीव गांधी के अनुभवहीन होने का काफी हर्जाना चुकाना पड़ा था। इन दोनों राज्यों में कमलापति त्रिपाठी, नारायण दत्त तिवारियों की छवि नकारा व अध्यक्ष नेताओं की रही थी। ये लोग सिर्फ और सिर्फ ऊँची जातियों ब्राम्हणों को संरक्षण देते सुने व देखे जाते रहे थे। यही हाल बिहार में जगन्नाथ मिश्र व ललित नारायण मिश्र व भगवत आजाद आदि ने भी किया। इन दोनों सूबों में लोकसभा के 150 से भी ज्यादा सदस्य चुने जाते रहे थे। वहां गलत नीतियों व ऊँची जाति वालों के अत्याचारों की सैकड़ों कहानियां आती रही हैं जिस के चलते कांग्रेस का परम्पराओं से जुड़ा दलित मुस्लिम पिछड़ा, अति पिछड़ा वोट बैंक उससे दूर होकर मुलायम सिंह यादव व लालू प्रसाद यादव के नेतृत्व में चला गया। ब्राम्हण मतदाता संघ परिवार से शुरू से ही जुड़ा था। वो भारतीय जनता पार्टी के साथ चला गया। नतीजे में तमाम शुक्ला, चतुर्वेदी व विकास दुबे की सत्ता की आड़ में पल रहे सियासतदां व पुलिस प्रशासन उन्हें संरक्षण देता रहा है।

उप्र से उखड़ी कांग्रेस

उत्तर प्रदेश व बिहार में कांग्रेस पार्टी अपने वोट बैंक को 10 फीसद तक भी नहीं सम्भाल पा रहे हैं। तमाम फिल्म स्टार वो ला चुके हैं व तमाम ढोंगी बाबाओं को कांग्रेस वहां ला चुकी है, सब नाकाम रहे थे। कांग्रेसियों का मिजाज

सामंती होता जा रहा था 1984 से क्योंकि राजीव गांधी ने कांग्रेस को उत्तर भारत में पूर्व राजा महाराजाओं के हवाले खुले आम जो कर दिया था। चाहे उत्तर प्रदेश में राजा मोडा हों या फिर मिर्जापुर इलाहाबाद, बनारस, कानपुर के माफिया डॉन ये ही लोग उसके आका बना दिए गए थे। आम कांग्रेस कार्यकर्त्ता इससे दूर होते गए। बहुगुणा तक यहां लोकप्रिय लोग कांग्रेस में रहे।

उन्हें भी राजीव गांधी की नादानी के चलते कांग्रेस में विदा कर दिया गया। एक गैर अनुभवी सियासतदां उत्तर प्रदेश में कांग्रेस को शमशान में खुले आम ले जाने लगे। 30 साल से वहां कांग्रेस उतर नहीं सकी है। उत्तर भारत में राजीव गांधी के पट्ठे मप्र, उप्र, बिहार व महाराष्ट्र में काबिज थे जो गांधीवादी विचारों से कोसों नहीं हजारों मील दूर रहते देखे गये थे। इनके ज्यादातर पूर्व राजा महाराजा ही ज्यादा थे जिन्होंने 1990-95 में रहे सहे कांग्रेसियों को जमींदोज कर दिया था। मप्र में छोटे से इलाके राजा दिग्विजय सिंह जरूर कांग्रेस की गांधीवादी विचारधारा व संत कबीर के विचारों से जुड़े देखे गये थे व कभी कभी संघ परिवार व भाजपा के नेताओं के दंगा कराने व हिन्दू मुस्लिम व मंदिर मस्जिद के बयानों पर जवाब देते रहे थे। माधवराव सिंधिया सामंत के तौर पर जरूर काफी लोकप्रिय रहे थे। उन्हें विकास का मसीहा कहा जाता था।

सत्ता की मलाई खा जाते हैं

आज कांग्रेस के केन्द्रीय नेतृत्व गांधी परिवार पर फिर से कुछ कांग्रेस सवाल दाग रहे हैं ये ओपन सीक्रेट है कि कांग्रेसियों का मिजाज सामंती बन चुका है और वो गांधी परिवार से दूर नहीं रह सकता। ये परिवार जहां एक तरफ देश को आजादी दिलाने वाला रहा है वहीं उसके तीन-तीन लोग शहीद हुए हैं। आतंकवाद से उनके विरोधियों ने उनकी सुरक्षा तक हटवा दी है जो सरासर गलत मानी जाती है। नेहरू गांधी परिवार ने देश को कई बार अच्छा नेतृत्व दिया पर आज वो मजबूत विपक्ष का संदेश देने में नाकाम रही है। राज्यों में सिंधिया जैसे लोग भाजपा में 22-24 विधायक लेकर कांग्रेस से जा चुके हैं व मध्य प्रदेश सरकार को गिरा देने से कांग्रेस की शाख को खास बट्टा लगा है। उधर केन्द्र सरकार के मुखिया दिन पर दिन आम जनता को गुमराह करते देखे जा रहे हैं। चीन सहित तमाम पड़ोसी देशों से भारत के सम्बन्ध खराब हो रहे हैं, खासतौर से नेपाल से। ये सरेआम केन्द्र सरकार की नाकामी है। राहुल गांधी 2019 की हार के बाद कांग्रेस से इस्तीफा देकर चले गये। वो जरूरी नहीं था। उन्हें पुनरू आ जाना होगा वरना देश को और भी खामियाजा भुगतना पड़ेगा। प्रधानमंत्री कहते रहेंगे कि चीन ने हमारी एक इंच भी भूमि नहीं हड़पी है और फिर रक्षा मंत्रालय दावा करेगा कि चीन काफी अन्दर तक आ चुका है। नेपाल भी आँखें दिखा रहा है और भाजपा संघ परिवार वाले कोविड के दौर में भी साम्प्रदायिक बातें करके देश तोड़ने की कार्यवाहियां लगातार करते आ रहे हैं। कांग्रेस की कमी है कि वो दलित मुस्लिम पिछड़ों के वोटों से सत्ता पर जरूर बैठ जाती है पर फिर उसे ऊँची जाति के नेता सत्ता की मलाई खाने आ जाते हैं और दलित और पिछड़े मुस्लिम पीछे ढकेल दिये जाते हैं। तमाम लोग कांग्रेस की सत्ता की मलाई खाने फिर आ जाते हैं। ये वही लोग होते हैं जो उसके खिलाफ चुनाव तक लड़ चुके होते हैं। वो कांग्रेस में ऊँचे पद पा जाते हैं। खनिज लूट व सरकारी जमीनों के खेल करके ये लोग करोड़ों डकार कर कांग्रेस को कमजोर करते रहे हैं।

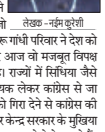

लेखक - नईम कुरेशी

पितरों की शांति के लिए श्राद्ध जरूरी

हिन्दू धर्म मे श्राद्ध अपने दिवंगत पूर्वजों का भावपूर्ण स्मरण कर उनके प्रति श्रद्धा भाव अभिव्यक्त करते हुए उनका तर्पण करने का अवसर है। ताकि उन्हें असीम शांति प्राप्त हो सके। श्राद्ध पक्ष में पितरो की दिवंगत तिथि को सुबह उठकर स्नान कर देव स्थान व पितृ स्थान को गाय के गोबर से लिपकर व गंगाजल से पवित्र कर लेना चाहिए। महिलाएं शुद्ध होकर पितरों की याद में पितरों की रुचि का भोजन बनाये। इसके बाद ब्राह्मण को घर पर बुलाकर या मंदिर में पितरों की पूजा और तर्पण का अनुष्ठान कराएं। आप ये काम खुद भी कर सकते हैं। पितरों के समक्ष अग्नि में गाय का दूध, दही, घी और खीर अर्पित करें। उसके बाद पितरों के लिए बनाए गए भोजन के चार ग्रास निकालें जिसमें एक हिस्सा गाय, एक कुत्ते, एक कौए और एक अतिथि के लिए रखें। गाय, कुत्ते और कौए को भोजन डालने के बाद ब्राह्मण को आदरपूर्वक भोजन कराएं, उन्हें वस्त्र और दक्षिणा दें। ब्राह्मण के रूप में आपका दामाद या ध्याना भी हो सकता है। यदि कोई व्यक्ति किसी कारणों से बड़ा श्राद्ध नहीं कर सकता तो उसे पूर्ण श्रद्धा के साथ अपने सामर्थ्य अनुसार उपलब्ध अन्न, साग-पात-फल और दक्षिणा किसी ब्राह्मण को आदर भाव से समर्पित करनी चाहिए।

श्राद्ध पक्ष में ।।ऊं नमो भगवते वासुदेवाय।।मन्त्र का वाचन करना चाहिए। जिस दिन श्राद्ध हो उस दिन श्राद्ध की शुरूआत और समापन में ।।देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्यन एव च। नमः स्वाहायै स्व धायै नित्यमेव भवन्युव त।।का वाचन करें।

आश्विन कृष्ण पक्ष प्रतिपदा से पितृ पक्ष श्राद्ध आरंभ होता है। इस वर्ष 13 सितंबर से पूर्णिमा को ऋषि तर्पण और श्राद्ध शुरू हो रहा है। 14 सितंबर से पितृ पक्ष श्राद्ध आरंभ होकर 28 सितंबर तक चलेगा। पितृ पक्ष पितरों को याद करने का समय माना जाता है। पितर 2 प्रकार के होते हैं एक दिव्य पितर और दूसरे पूर्वज पितर। दिव्य पितर ब्रह्मा के पुत्र मनु से उत्पन्न हुए ऋषि हैं। पितरों में सबसे प्रमुख अर्यमा हैं जिनके बारे में गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है कि पितरों में प्रधान अर्यमा वे स्वयं हैं।

दूसरे प्रकार के पितर पूर्वज होते हैं। पितृपक्ष में अपने इन्हीं पितरों को लोग याद करते हैं और इनके नाम से पिंडदान, श्राद्ध और ब्राह्मण भोजन करवाते हैं। कठोपनिषद्, गरुड़ पुराण, मार्कण्डेय पुराण के अनुसार पितर अपने परिजनों के पास पितृपक्ष श्राद्ध के समय आते हैं और अन्न जल एवं आदर की अपेक्षा करते हैं। जिन परिवार के लोग पितृ पक्ष के दौरान पितरों के नाम से अन्न जल दान नहीं करते। श्राद्ध कर्म नहीं करते हैं। उनके पितर भूखे-प्यासे धरती से लौट जाते हैं। इससे परिवार के लोगों को पितृ दोष लगता है। इसे पितृ शाप भी कहते हैं। इससे संतान प्राप्ति में बाधा आती है। परिवार में रोग और कष्ट बढ़ जाता है।

पितृ पक्ष में जिन तिथियों में पूर्वज यानी पिता, दादा, परिवार के लोगों की मृत्यु हुई होती है उस तिथि को उनका श्राद्ध किया जाता है। श्राद्ध का नियम है कि दिन के समय पितरों के नाम से श्राद्ध और ब्राह्मण भोजन करवाना चाहिए। देवताओं की पूजा सुबह में और पितरों की दोपहर में होती है। पूर्वाह्णे मातृकं श्राद्धमराह्णे तु पैतृकम। एकोद्दिष्टं तु मध्याह्ने अंगुली में पहन कर हाथ में जल, सुपारी, सिक्का, फूल लेकर निम्न संकल्प लें।

अपना नाम एवं गोत्र उच्चारण करें फिर बोले अथ् श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं देवर्षिमनुष्यपितृतर्पणम प्लेट), कच्चा दूध, गुलाब के फूल, फूल-माला, कुशा, सुपारी, जौ, काली तिल, जनेऊ आदि पास में रखे।

आसन पर बैठकर तीन बार आचमन करें।

- केशवाय नमः,
- माधवाय नमः ,
- गोविन्दाय नमः बोलें।

आचमन के बाद हाथ धोकर अपने ऊपर जल छिड़के अर्थात् पवित्र होवें, फिर गायत्री मंत्र से शिखा बांधकर तिलक लगाकर कुशे की पवित्री (अंगूठी बनाकर) अनामिका अंगुली में पहन कर हाथ में जल, सुपारी, सिक्का, फूल लेकर करिष्ये।।

फिर थाली या ताम्र पात्र में जल, कच्चा दूध, गुलाब की पंखुड़ी डाले, फिर हाथ में चावल लेकर देवता एवं ऋषियों का आह्वान करें। स्वयं पूर्व मुख करके बैठें, जनेऊ को रखें। कुशा के अग्रभाग को पूर्व की ओर रखें, देवतीर्थ से अर्थात् दाएं हाथ की अंगुलियों के अग्रभाग से तर्पण दें, इसी प्रकार ऋषियों को तर्पण दें।

फिर उत्तर मुख करके जनेऊ को कंठी करके (माला जैसी) पहने एवं पालकी लगाकर बैठे एवं दोनों हथेलियों के बीच से जल गिराकर दिव्य मनुष्य को तर्पण दें, इसके बाद दक्षिण मुख बैठकर, जनेऊ को दाहिने कंधे पर रखकर बाएं हाथ के नीचे ले जाए, थाली या ताम्र पात्र में काली तिल छोड़े फिर काली तिल हाथ में लेकर अपने पितरों का आह्वान करें

ऊँ आगच्छन्तु में पितर इमम ग्रहन्तु जलान्जलिम

फिर पितृ तीर्थ से अर्थात् अंगूठे और तर्जनी के मध्य भाग से तर्पण दें।

जो स्वजन अपने शरीर को छोड़कर चले गए हैं चाहे वे किसी भी रूप में अथवा किसी भी लोक में हों, उनकी तृप्ति और उन्नति के लिए श्रद्धा के साथ जो शुभ संकल्प और तर्पण किया जाता है, वह श्राद्ध है। माना जाता है कि सावन की पूर्णिमा से ही पितर मृत्यु लोक में आ जाते हैं और नवांकुरित कुशा की नोकों पर विराजमान हो जाते हैं। ऐसी मान्यता है कि पितृ पक्ष में हम जो भी पितरों के नाम का निकालते हैं, उसे वे सूक्ष्म रूप में आकर ग्रहण करते हैं। केवल तीन पीढ़ियों का श्राद्ध और पिंड दान करने का ही विधान है।

कहा जाता है कि मृत्यु के देवता यमराज श्राद्ध पक्ष में जीव को मुक्त कर देते हैं, ताकि वे स्वजनों के यहां जाकर तर्पण ग्रहण कर सकें। श्राद्ध पक्ष में मांसाहार पूरी तरह वर्जित माना गया है। श्राद्ध पक्ष का महात्मय उत्तर व उत्तर-पूर्व भारत में ज्यादा है। तमिलनाडु में आदि अमावसांई, केरल में करिकडा वावुवली और महाराष्ट्र में इसे पितृ पंधरवडा नाम से जानते हैं। श्राद्ध स्त्री या पुरुष, कोई भी कर सकता है। श्रद्धा से कराया गया भोजन और पवित्रता से जल का तर्पण ही श्राद्ध का आधार है।

श्राद्ध का अनुष्ठान करते समय दिवंगत पूर्वज का नाम और उसके गोत्र का उच्चारण किया जाता है। हाथों में कुश की पैंती (उंगली में पहनने के लिए कुश का अंगूठी जैसा आकार बनाना) डालकर काले तिल से मिले हुए जल से पितरों को तर्पण किया जाता है। मान्यता है कि एक तिल का दान बत्तीस सेर स्वर्ण तिलों के बराबर है। परिवार का उत्तराधिकारी या ज्येष्ठ पुत्र ही श्राद्ध करता है। जिसके घर में कोई पुरुष न हो, वहां स्त्रियां ही इस परम्परा को निभाती हैं। परिवार का अंतिम पुरुष सदस्य अपना श्राद्ध जीते जी करने के लिए स्वतंत्र माना गया है। संन्यासी वर्ग अपना श्राद्ध अपने जीवन में कर ही लेते हैं।

शुभ कार्य श्राद्ध पक्ष में वर्जित माने गए हैं। श्राद्ध का समय दोपहर साढ़े बारह बजे से एक बजे के बीच उपयुक्त माना गया है। यात्रा में जा रहे व्यक्ति, रोगी या निर्धन व्यक्ति को कच्चे अन्न से श्राद्ध करने की छूट दी गई है। वैसे तो श्राद्ध, श्राद्धपक्ष में ही किये जाने की परम्परा है। परंतु व्यक्ति चाहे तो अपने पूर्वजों को नित्य प्रति अर्थात हर रोज श्राद्ध कर सकता है।जिससे दिवंगतों की आत्मा सदैव तृप्त रहती है। जिससे पितर खुश रहते है और सदैव तर्पण करने वाले व उसके परिवार को सुख शांति के कारक बनते है।

लेखक-डॉ श्रीगोपाल नारसन, एडवोकेट

न्यूज ब्रीफ

7 सितंबर से प्रारंभ होगा खाद्यान्न पर्ची वितरण कार्यक्रम

माही की गूंज, खरगोन। प्रदेश में खाद्यान्न पर्ची वितरण महाअभियान 7 सितंबर से प्रारंभ होगा। पूर्व में इस महाअभियान की शुरूआत 3 सितंबर से होना थी। खाद्य विभाग के संचालक तरूण कुमार पिथौड़े ने बताया कि, पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी का निधन होने से प्रदेश में 6 सितंबर तक राजकीय शोक घोषित है, इस कारण महाअभियान की तिथि में परिवर्तन किया गया है। प्रदेश के 52 जिलों में एक साथ प्रारंभ होने वाला खाद्यान्न पर्ची वितरण कार्यक्रम 7 से 15 सितंबर तक संपन्न होगा।

विधानसभा सत्र के दौरान दूरभाष पर जिम्मेदार अधिकारियो की हो ड्यूटी

माही की गूंज, खरगोन। आगामी 21 सितंबर से 23 सितंबर तक तीन दिवसीय मप्र विधानसभा का सप्तम सत्र आयोजित होगा। इस दौरान विधानसभा में प्रश्नों का आदान-प्रदान होगा। इस संबंध में राज्य शिक्षा केंद्र के आयुक्त ने समस्त जिला परियोजना समन्वयकों को पत्र जारी कर विधानसभा के दौरान दूरभाष पर किसी जिम्मेदार अधिकारी/कर्मचारी की ड्यूटी लगाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि, दूरभाष पर ड्यूटी करने वाले के पास विधानसभा प्रश्न एवं उत्तर की एक प्रति अनिवार्य रूप से रखी जाएं। जिला परियोजना समन्वयक प्रतिदिन विधानसभा की वेबसाईट चेक करें और अपने जिले की ई-मेल चेक कर विधानसभा संबंधी प्रकरण डाउनलोड करें। यदि विधानसभा प्रश्न विस्तृत प्रकृति का हो, तो विधानसभा प्रश्न की प्राप्ति से 3 दिवस की अवधि में विधानसभा प्रश्न संशोधित कराया जाए। इसके लिए विधानसभा प्रश्न प्राप्ति के बाद तत्काल कार्यवाही करें। विधानसभा प्रश्नों के उत्तर कलेक्टर के हस्ताक्षर से ही मान्य किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि, जिन प्रश्नों का अंतरिम उत्तर दिया जाना है, उन प्रश्नों के पूर्ण उत्तर भेजने के लिए सतत् कार्रवाई की जाए, ताकि अनावश्यक विलंब न हों।

नेटवर्क से परेशान बीएसएनएल उपभोक्ताओ ने वरिष्ठ अधिकारीयो से की शिकायत

माही की गूंज, सनावद। भारतीय संचार निगम लिमिटेड बीएसएनएल के नेटवर्क की समस्या से आम नागरिक परेशान हो रहे है। इस संबंध में नागरिकों ने अलग-अलग प्रतिक्रिया देकर बीएसएनएल की व्यवस्था सुधारने की मांग की है। स्थानीय बीएसएनएल ऑफिस में कोई भी जवाबदार अधिकारी नही होने से स्थानीय लोगों की समस्याओं का निराकरण नही हो पाता है। बड़वाह में भी अनुविभागीय अधिकारी की पोस्ट पिछले 6 माह से खाली पड़ी है। नागरिकों ने बताया कि, बीएसएनल का टावर करीब 15 दिन से नेटवर्क नहीं दे रहा है, जिससे ऑफिस एवं घर के जरूरी कामों को करने में परेशानी आ रही है।

स्थानीय उपभोक्ताओ ने बताया कि, फोन में टॉवर नही आ रहा है, 5 दिन से सनावद में नेटवर्क गड़बड़ है, जबकि इंदौर में नेटवर्क सही मिलता है, एक उपभोक्ता ने बताया कि उनके 3 नंबर बीएसएनएल के है, पर नेटवर्क नही है, ऑफिस में थोड़ा नेटवर्क आ जाता है, ऑफिस से बाहर निकलते ही नेटवर्क गायब हो जाता है। वही नेटवर्क की समस्या रहने से विद्यालय के कार्य नही हो पा रहे है और 3 दिन से नेटवर्क की समस्या बढ गई है। महात्मा गाँधी रोड व्यापारिक क्षेत्र है, लेकिन यहाँ भी पिछले 5 दिन से नेटवर्क की समस्या है। उपभोक्ताओ ने बताया कि, बीएसएनएल विभाग के अधिकारियों को इस संबंध में जानकारी दी है, लेकिन उनके द्वारा तकनीकी समस्या बताई जा रही हैं, बीएसएनएल के वरिष्ठ अधिकारियों से शीघ्र ही व्यवस्था सुधारने की मांग की है।

पुल क्षतिग्रस्त होने से ओंकारेश्वर का रास्ता हुआ बंद

माही की गूंज, सनावद।

इंदौर-इच्छापुर मार्ग स्थित मोरटक्का पुल पर पिछले 2 दिनों से बड़ी मात्रा में पानी बह रहा था। जिसके बाद मंगलवार को पुल से पानी उतरने के बाद पुल कुछ जगह से क्षतिग्रस्त दिखा, जिसके बाद खंडवा एवं खरगोन जिले के राजस्व एवं पुलिस अधिकारियों ने मौके पर पहुंचकर पुल की स्थिति को जाना। ऊपरी क्षेत्र में हो रही लगातार बारिश के साथ ही ओंकारेश्वर एवं पुनासा बांध से लगातार पानी छोड़ने के कारण इंदौर-इच्छपुर हाईवे का नर्मदा पुल शनिवार दोपहर 2 बजे से बंद था। जिस पर 2 दिन तक करीब 32 हजार क्यूमेक्स पानी बहा। वहीं ब्रिटिश शासन काल में बने इस पुल ने कई दौर और मंजर देखे है। 2020 में आई विकराल बाढ़ ने इस पुल के कुछ हिस्से को क्षतिग्रस्त कर दिया। इसके बाद पूनासा एसडीएम ममता खेड़े, तहसीलदार उदय मंडलोई, औंकारेश्वर टीआई जगदीश पाटीदार, चौकी प्रभारी सत्येंद्र कुशवाह, बडवाह विधायक सचिन बिरला, बडवाह टीआई शेलेन्द्र द्विवेदी ने वहां जाकर पुल की स्थिति को जाना। पुल पर कुछ जगह रेलिंग टूटने के साथ सड़क उखड़ गई है, पुल के कुछ भाग को भी पानी ने अपने आगोश में समा लिया है। जिसके बाद इस पुल पर जरूरी सुधार कार्य करने के बाद आवागमन शुरू होने की संभावना है।

एसडीएम खेड़े ने बताया कि, ऊपरी क्षेत्र में बारिश और बाढ़ प्रबंधक द्वारा पानी छोड़ने की स्थिति को देखते हुए पुल अभी शुरू करना है या नहीं यह निश्चित नहीं किया है। लेकिन पुल पर सुचारू आवागमन पूर्ण रूप से पुल के ठीक होने के बाद ही शुरू किया जा सकेगा।

ब्रिटिश शासन ने बनाया था पुल

इंदौर-इच्छापुर हाईवे पर बने पुल ब्रिटिश शासनकाल के समय का बना हुआ था। इस पुल ने कई बाढ़ का दौर देख लिया है। लेकिन 2020 का यह वर्ष बेतहाशा बारिश और बाढ़ का मंजर लेकर आया था। जिसके बाद यह पुल इतने पानी को भी सहन कर गया। स्थानीय नागरिकों ने बताया कि यह पुल पर कई दौर गुजरे। लेकिन आज भी हजारों वाहनों का आवागमन सहन कर रहा है। इस पुल से प्रतिदिन बड़े एवं छोटे वाहनों के निकलने का सिलसिला चलता रहता है। साथ ही मध्य प्रदेश से महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश तक जोड़ने वाला एकमात्र रास्ता होने से इस पर वाहनों की आवाजाही हमेशा बनी रहती है।

अनलॉक 4 की गाइडलाईन जारी, 21 सितंबर से अधिकतम सौ लोगों की उपस्थिति में हो सकेंगे कार्यक्रम

माही की गूंज, खरगोन।

1 सितंबर से 30 सितंबर तक की अवधि के लिए भारत सरकार द्वारा जारी गाईडलाईन के पालन के लिए प्रदेश सरकार ने आदेश जारी कर दिए हैं। गृह विभाग के अपर मुख्य सचिव डॉ. राजेश राजौरा ने बताया कि, रियायतों के साथ अनलॉक 4 की गाईडलाईन जारी की हैं। कोरोना चेन-ब्रेकिंग के लिए आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुए पुख्ता प्रबंध कर निश्चित लोगों की उपस्थिति में 21 सितंबर के बाद कार्यक्रम आयोजित हो सकेंगे। गाईडलाईन का उल्लंघन होने पर कानूनी कार्यवाही की जाएगी। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा जारी की जाने वाली एसओपी के बाद 21 सितंबर से अधिकतम 100 लोगों की उपस्थिति में विभिन्न सामाजिक अकादमिक, स्पोर्ट्स, मनोरंजन, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक और अन्य सामुहिक कार्यक्रम किए जा सकेंगे। इसमें भी फेस मास्क, फिजिकल डिस्टेंसिंग, थर्मल स्केनिंग और सेनेटाइजेशन के प्रबंध रखना अनिवार्य रहेगा। 21 सितंबर से कनटेंनमेंट जोन के बाहर के स्कूलों में ऑनलाईन और डिस्टेंस लर्निंग की गतिविधियां संचालिक हो सकेंगी। स्कूलों में 50 प्रतिशत टीचिंग और नॉन-टीचिंग स्टॉफ को बुलाया जा सकेगा। कक्षा 9वीं से 12वीं तक के विद्यार्थी पालकों की सहमति से स्कूलों में शिक्षकों से मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए आ सकेंगे। राष्ट्रीय संस्थानों और इससे पंजीकृत संस्थानों में लघु कौशल शिक्षण की अनुमति रहेगी। उच्च शिक्षा विभाग गृह मंत्रालय की सहमति से शोधार्थियों और तकनीकी और व्यावसायिक कार्यक्रमों में स्नातकोत्तर कक्षाओं में अध्ययनरत छात्रों को कोविड-19 की गाईडलाईन के अनुसार अनुमति प्रदान कर सकेगा। 30 सितंबर तक स्कूल, कॉलेज, शैक्षणिक और कोचिंग संस्थान बंद रहेंगे। इनमें नियमित संचालित होने वाली गतिविधियां नहीं होंगी।

कलेक्टर माईक्रो लेवल पर कंटेनमेंट झोन को चिन्हांकित कर सकेंगे

केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के निर्देशानुसार जिला कलेक्टर कोरोना की चेन को तोड़ने के लिए माइक्रो लेवल पर कंटेनमेंट झोन को चिन्हांकित कर सकेंगे। जिला कलेक्टरों को इन झोन को वेबसाईट पर अधिसूचित करना होगा। राज्य में कहीं भी आने-जाने पर कोई पाबंदी नहीं रहेगी। आने-जाने के लिए किसी प्रकार की अनुमति, अनुमोदन या ई-परमिट की जरूरत नहीं होगी। अनलॉक 4 की गाईडलाईन में 65 वर्ष से अधिक उम्र के वृद्धजनों और 10 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को अत्यावश्यक नहीं होने पर घरों में रहने की सलाह दी गई है। भारत सरकार द्वारा जारी अनलॉक 4 की गाईडलाईन में राज्य स्तर से किसी भी प्रकार का बदलाव नहीं किया जा सकेगा। फिजिकल डिस्टेंसिंग का पालन कराने के लिए राज्य सरकार धारा 144 का प्रयोग कर सकती हैं। गाईडलाईन का उल्लंघन करने पर आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005 के अंतर्गत कानूनी कार्यवाही की जाएगी।

कलेक्टर ने पर्यावरण मतवालो के साथ सोनकुंज पहाड़ी पर पहुंचकर किया पौधारोपण

माही की गूंज, बड़वानी।

बड़वानी कलेक्टर शिवराज सिंह वर्मा ने रेवाकुंज हेप्पीनेस क्लब के सदस्यों के साथ सोनकुंज पहाड़ी पर पहुंचकर पौधारोपण के कार्य का शुभारंभ किया ।

ज्ञातव्य है कि, विगत कुछ माह पूर्व जिले में पदस्थ कलेक्टर शिवराज सिंह वर्मा ने बड़वानी नगर के आसपास की पहाड़ियों पर सघन पौधारोपण कर उन्हें पुनः हरा-भरा करने का अभियान प्रारंभ किया है। इस अभियान के प्रथम चरण में नवीन सर्किट हाउस के पास स्थित 10 पहाड़ियों पर 25 हजार से अधिक पौधे लगाये गये है। जबकि लोनसरा की पहाड़ी पर ग्रामवासियों के सहयोग से लगभग 3 हजार पौधे लगाकर उन्हें हरा - भरा किया है। अब उन्होने पेरामाउण्ट स्कूल के पास की पहाड़ी पर पौधारोपण का कार्य प्रारंभ किया है। यहाँ पर भी लगभग 5 से 7 हजार पौधे लगाकर उन्हें बड़ा करने हेतु ड्रीप सहित जालियों की सुरक्षा घेरा खड़ा करने का कार्य तेजी से प्रारंभ।

डॉ. विक्रांत भूरिया कोरोना सेंटर का निरिक्षण कर मरीजों से हुए रूबरू

माही की गूंज, झाबुआ। विधायक प्रतिनिधि डॉ. विक्रांत भूरिया ने बुधवार को स्थानीय बाड़कुआ स्थित कोविड सेंटर पहुंचकर वहां का औचक निरिक्षण किया। डॉ. भूरिया ने वहां उपस्थित डॉ. सावन्तसिंह चौहान, डॉ. सुमित सोनी एवं उपस्थित स्टापगणों से मुलाकात की एवं वहां स्थिति का जायजा लिया तथा उनकी हौसला अफजाई की। डॉ. भूरिया ने वहां पर दूरी बनाकर कोरोना पिड़ित मरीजों से बात-चीत की एवं उन्हें वहां पर दी जारी सुविधाओं की जानकारी भी ली। मरीजों ने बताया कि, कोविड सेंटर में लगातार मरीजों के आने से कुछ समय के लिए व्यवस्थाएं गडबड़ा गई थी, लेकिन उसमें अब सुधार कर लिया गया है, तथा नए मरीजों को यहां की बजाए गोपालपुरा स्थित नवीन कोरोना सेंटर भेजा जा रहा है। स्टाफद्वारा समय-समय पर उनके स्वास्थ्य की जानकारी ली जा रही है तथा ईलाज भी बराबर किया जा रहा है, साफ सफाई की भी व्यवस्था बराबर की जा रही है। कुछ छोटी-मोटी समस्या है जो हमने स्टाफको बता दी है, इसका भी निराकरण हेतु व्यवस्था की जा रही है। डॉ. भूरिया ने कहा कि, हम सबको एक दूसरे का सहयोग कर कोरोना महामारी को जिले, प्रदेश एवं देश से मुक्त कराना है। यदि उसमें थोड़ी भी कमी महसूस होती है तो आपस में मिलकर इन कमीयों को दूर करने का प्रयास करना होगा, तभी हम इन कोरोना योद्धाओं के साथ मिलकर कोरोना महामारी का अन्त करेंगे। इस अवसर पर जिला आई टी सेल के अध्यक्ष हर्ष जैन, जयसिंह सिकरवार, डॉ. सावन्तसिंह चौहान, डॉ. सुमित सोनी एवं स्टापगण उपस्थित थें, उक्त जानकारी प्रवक्ता हर्ष भटट् ने दी।

श्रद्धापूर्वक किए श्राद्ध से होता है पितरों का उद्धार

माही की गूंज इन्दौर। निशिकांत मंडलोई।

श्राद्ध सनातन धर्मियों का एक विशिष्ट पर्व है। अश्विन कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से अमावस्या तक का समय पितृ पक्ष कहलाता है। इस पक्ष में दिवंगत पूर्व पुरुषों, पुरखाओं और प्रेतात्माओं को उनकी तृप्ति हेतु आभार, आदर, कृतज्ञतापूर्ण भाव से तिल सहित जलांजलि प्रदान करने की विधि का नाम ही श्राद्ध है। इस अनुष्ठान को ,,तर्पण,, कहते हैं। तर्पण श्राद्ध कर्म का अत्यावश्यक अंग है। श्राद्ध के विविध प्रकार के पुरातन प्रचलन का विस्मयकारी विस्तृत विवरण महर्षि वाल्मीकिजी के दिवंगत महाराज दशरथ, पक्षीराज जटायु, वानरराज बाली, गिद्धराज सम्पाती और राक्षसराज रावण के संदर्भ में रोचक पूर्ण ढंग से किया गया है और उसी की पुनरावृत्ति के दर्शन गोस्वामी जी के लोकप्रिय महाकाव्य श्रीराम चरित मानस में होते हैं। इसके अनुसार

भरत जी ने सरयू तट पर,, एहि विधि दाह क्रिया सब कीन्ही, विधिवत। नहाइ तिलांजुलि दीन्ही। भगवान रामचंद्रजी ने चित्रकूट में मंदाकिनी में स्नान कर निर्जल व्रत किया और करि पितु क्रिया बेद जस बरनी। पक्षीराज जटायु के लिए,, तेहि की क्रिया जथोचित निजकर कीन्ही राम। वानरराज बाली के हित में , तब सुग्रीवहिं आयुष दीन्हा, मृतक कर्म सब विधिवत कीन्हा।, क्षुधातुर गिद्धराज सम्पाती ने वानर दल से अपने अनुज जटायु के बलिदान की गाथा सुन आग्रह किया,,, मोही लै जाहु सिंधु तट देउ तिलांजुलि ताहि, राक्षस कुल में विभीषण ने अपने भाई रावण की ,, कीन्ही क्रिया प्रभु आयसु मानी और तदनंतर मंदोदरी आदि सब देइ तिलांजुलि ताहि,

पितृ पक्ष पर विशेष

हमारे देश में बिहार में गया जी में फल्गु नदी में श्राद्ध करनी पितरों का उद्धार होता है। गुजरात में सरस्वती नदी के किनारे सिद्धपुर में महर्षि कपिल के आश्रम बिंदु सरोवर पर मातृ वर्ग हेतु श्राद्ध क्रिया होती हैं। हिमालय की गोद में अलकनंदा के तट पर सुप्रसिद्ध बद्रीनाथ में तीर्थ यात्री अपने पूर्वजों के उद्धार के लिए ब्रह्म कपाली क्रिया कराते हैं। महालय अर्थात पितृ पक्ष के अंतिम दिन अमावस्या को धर्मानुरागी हिन्दू पुण्य तोया नदी, सरोवर, समुद्र तट, तीर्थ स्थान या अपने अपने निवास पर ही श्रद्धापूर्वक टिल सहित जलांजुली अर्पण करते हैं। अपने ही

कल्याण के लिए अधिक न हो सके तो पितृ पक्ष में महालय श्राद्ध तो अवश्य करना ही चाहिए।

पितृ पक्ष में सभी पितृगण पितृलोक से भ्रमण पर निकलते है। पितृगण अपने वंशजो से कामना करते हैं कि वे उनके उद्धार के लिए तर्पण करें। पितृगण यथाधिकार अपने कुटुंब परिवार के द्वार पर वायु रूप में मंडराते हुए मधु, पायस खीर, पूप मालपुआ, घृत, मिष्ठान्न आदि पाने की आकांक्षा करते हैं। श्रद्धापूर्वक किए श्राद्ध का अंश पित्तर प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करते हैं और अपने वंशजों की मनोवाछित सुख समृद्धि का आशीर्वाद प्रदान करते हैं लेकिन , जब निश्चित अवधि तक उन्हें कुछ नहीं मिलता है, तब वे अत्यंत दुखित और पीड़ित होकर लौट जाते हैं। पितृगण देवताओं से भी अधिक दयालु होते हैं और अपने वंशजों द्वारा किए श्राद्ध से अति प्रसन्न होते हैं।

श्राद्ध पध्दति में पितृ तर्पण हेतु अपेक्षा यह है कि श्राद्ध भोजन के लिए उपयुक्त ब्राह्मण-ब्राह्मणी को यथासमय श्राद्ध के एक दिन पूर्व निमंत्रित करें। वार्षिक तिथि पर श्राद्ध के दिन प्रातः मन से अपने पितरों का श्रद्धापूर्वक स्मरण करें

स्नान कर भगवान सूर्य नारायण को अर्घ्य दें। श्राद्ध का संकल्प लें। दक्षिण दिशा में पितृ का आसन लगाकर पूजनोपयोगी वस्तुएटिल, गंध, पुष्प, ताम्बुल, वस्त्र आदि रखें। पाताल दोनो में पकवानों पर शहद लगाकर पितृ आसन के सम्मुख रखें। श्राद्धकर्ता पंच बलि अर्थात पांच ग्रास क्रमशः गाय, श्वान, काक, अभ्यागत, कीट पतंगों के निमित्त निकालो। पितृ आसान, पाताल दोनो तथा पंच बलि के चारों ओर जल से मंडल कर्म। पातल के बाहर तिल छिड़ककर पूर्व दिशा की ओर मुंह करके आशीर्वाद के लिए प्रार्थना करें। काक, श्वान ओर अभ्यागत की बलि वितरित कर बाकी सभी बलि गाय को दे दें। आमंत्रित विप्रवृन्द का पेड़ प्रक्षालन कर उन्हें आसन पर बैठाकर विन्यभाव से आदरपूर्वक पकवान परोसें। भोजन उपरांत उन्हें मुख शुद्धि हेतु पान, सुपारी प्रदान कर तिलक करें, दक्षिणा दें और आशीर्वाद प्राप्त करें इसके उपरांत अपने मेहमानों और कुटुम्बियों के साथ बैठकर भोजन प्रसादी ग्रहण करें। पितृ ऋण से मुक्त होने के लिए तथा स्वयं के कल्याण हेतु आस्था व निष्ठा के साथ वंश परम्परागत श्राद्ध सम्पादन करना वांछनीय है।

विधायक बिरला ने एसडीएम को बाढ प्रभावित का आकलन करने के दिए निर्देश

माही की गूंज, सनावद।

विधायक सचिन बिरला ने सोमवार को नर्मदा तट स्थित ग्राम मर्दाना और नगावां की बाढ़ प्रभावित बस्तियों का दौरा किया और ग्रामीणों से चर्चा की।

विधायक बिरला ने निचली बस्तियों में चल रही नावों में बैठकर स्थिति का आकलन किया। बिरला ने एसडीएम से चर्चा कर बाढ़ प्रभावित घरों, खलिहानों और मंदिरों में हुए नुकसान का आकलन करने के निर्देश दिए। ताकि प्रत्येक बाढ़ प्रभावित ग्रामीणों को समुचित मुआवजा मिल सके।

प्रत्येक बाढ़ प्रभावित परिवारों को मुआवजा दिलाएंगे

बिरला ने ग्रामीणों को आश्वस्त किया कि किसी भी बाढ़ प्रभावित ग्रामीण को मदद से वंचित नहीं रहने दिया जाएगा। ग्रामीणों ने विधायक बिरला को ग्राम में नर्मदा का जल घुसने से हो रही कठिनाइयों से अवगत किया।

ग्रामीणों ने की शिकायत

ग्राम नगावां के बाढ़ प्रभावित परिवारों ने बिरला को बताया कि घरों में बाढ़ का पानी घुसे 48 घण्टे बीत जाने के बावजूद प्रशासन का कोई प्रतिनिधि ग्राम में नहीं आया। मर्दाना में भी ग्रामीणों ने बिजली कटौती और बिजली के तार मार्ग पर लटकने की शिकायत की। विधायक बिरला ने संबंधित अधिकारियों से चर्चा कर समस्याओं के निराकरण के निर्देश दिया। ग्रामीणों ने बताया कि मर्दाना में लगभग 150 मकान और ग्राम नगावां में लगभग 50 घर बाढ़ के पानी में डूब चुके हैं। इसके अलावा दोनों ग्रामों में अनेक खलिहानों में भी पानी भर गया है।अनेक मन्दिर भी जलमग्न हैं। बिरला ने दोनों ग्रामों की जलमग्न बस्तियों का व्यापक निरीक्षण किया और प्राकृतिक आपदा से हुई हानि पर दु:ख व्यक्त किया।

लगातार पंचायतों के भ्रष्टाचार हो रहे उजागर

अब तारखेड़ी और कचराखदान ग्राम पंचायत में सड़क के नाम पर हुआ एक और भ्रष्टाचार

राशि निकाल कर खा गए सरपंच-सचिव, पर 2017 में स्वीकृत सड़क आज तक नही बनी, समाचार बन गए अधिकारियों के चांदी काटने का माध्यम

ग्राम पंचायत तारखेड़ी में 2017 में मंदिर से रावला तक स्वीकृत सड़क जो आज तक नही बनी।

ग्राम पंचायत कचराखदान स्वीकृत सड़के, कालू सोभान के घर से हुमसिह पांगला के घर तक, बिल जिनका बिना रोड बनाए भुगतान किया गया।

माही की गूंज, पेटलावद। राकेश गेहलोत

पेटलावद विकास खंड में वर्ष 2017-18 में हुए बड़े घोटाले के उजागर होने की संभावना है, अगर सही जाँच पड़ताल की जाए तो वर्ष 2018 में मध्यप्रदेश में होने वाले विधानसभा चुनाव लड़ने के लिए शासकीय राशि के दुरुपयोग का बड़ा खुलासा हो सकता हैं। जब विकास खण्ड पेटलावद या फिर पूरे जिले की ग्राम पंचायतो के खातों में लाखों रुपए की राशि का आवंटन पंच परमेश्वर व अन्य योजना में हर पंचायतो में वर्ष 2017-18 में लाखो के सीसी रोड सहित पाईप लाइन ओर अन्य कार्य स्वीकृत किए गए, लेकिन अधिकांश पंचायतों में 2017 में स्वीकृत कई सड़क और अन्य कार्य धरातल पर बिना बनाए ही शासकीय योजनाओ की राशि खाते से फर्जी बिल लगा-लगाकर निकाल ली गई। माही की गूंज लगातार पंचायतों के इस प्रकार के मामले उजागर कर रही है, लेकिन सब मे एक बात कामन हैं अधिकांश स्वीकृत कार्य वर्ष 2017 के है, केवल पेटलावद ही नही जिले के सभी विकास खण्ड में इस प्रकार के मामले सामने आ चुके है। पेटलावद विकास खण्ड की असालिया, खोरिया, बरवेट, मोहूवड़ीपाड़ा, काजबी, बाछीखेड़ा, कोदली, मोहकमपुर, मोहनपुरा, रताम्भ, कालीघाटी, बनी सहित कई पंचायतो में इस प्रकार के मामलों का खुलासा गूंज द्वारा मय प्रमाण के साथ किया गया, जानकारी और कई मामलो में लिखित शिकायते उच्च अधिकारियों और सीएम हेल्पलाइन तक ग्रामीणो द्वारा की गई, जाँच में खुला भ्रष्टाचार पाया गया लेकिन कार्रवाई के नाम पर शून्य ही सामने आया है। कुछ पंचायतो में सरपंचों को धारा 40 में नोटिस थमाया गया तो कई सरपंच-सचिव से वसूली के आदेश भी दिखावे के लिए जारी किए गए लेकिन न धारा 40 के नोटिस पर कार्रवाई आगे बड़ी, न कोई वसूली हुई और न ही धरातल पर कोई निर्माण कार्य भ्रष्टो से करवाया गया, सबसे बड़ी आश्चर्य की बात तो ये हैं कि, इतने भारी उजागर हो चुके भ्रष्टाचार व अनियमित्ता के बाद भी किसी ग्राम पंचायत के सचिव पर कोई कड़ा कदम उठाया गया, जबकि जिस स्थिति में भ्रष्टाचार को अंजाम दिया गया हैं उसमें जिम्मेदारो पर सीधा-सीधा कई कानूनी धाराओं में अपराध दर्ज होता है जो कि आज तक नही किया गया, यानी समाचार के माध्यम से हुए खुलासे महज अधिकारीयो के लिए चांदी काटने का जरिया बन गया है।

भ्रष्टो ने विश्व मंगलधाम को भी नही बख्शा

प्रदेश के कई जिलो सहित आस-पास के राज्यो से श्रद्धालुओं की भीड़ ग्राम पंचायत तारखेड़ी में सुप्रसिद्ध विश्व मंगलधाम दर्शन के लिए आते हैं और निर्मल ग्राम का तमका दिया गया है, लेकिन भ्रष्टो ने भगवान के पवित्र धाम को भी नही छोड़ा, यहाँ पंच परमेश्वर योजना के अंतर्गत मंदिर से रावल तक बनने वाले 5 लाख की लागत का सीसी रोड वर्ष 2017 के मई माह में स्वीकृत हुआ, लेकिन चार साल बाद तक रोड धरातल पर नही बना, जबकि वर्ष 2017 में पंच परमेश्वर के खाते में आई राशि की एक-एक पाई पंचायत के भ्रष्ट नुमाइंदो ने नोच खाई पर रोड नही बनाया। ऑनलाइन पोर्टल पर मिल रही जानकारी अनुसार ग्राम पंचायत ने रोड कागज पर बना कर राशि निकाल ली, इस विषय मे जब जिम्मेदारो से जानकारी ली गई तो हर बार की तरह इस बार भी बगले झांकते हुए खबर न छापने के लिए गूंज प्रतिनिधि को दुसरो की तरह प्रलोभन देकर मामले को यही दबाकर खत्म करने की बात की जाती रही। लेकिन इन भ्रष्टो को यह नही मालुम कि किसी के भी, किसी भी तरह के प्रलोभन से गूंज की कलम प्रभावित कभी नही होती। पंचायत के एक ग्रामीण ने सोशल मीडिया पर ग्राम पंचायत के कारनामो को उजागर किया उसे भी ऐसे ही प्रलोभन देकर पोस्ट हटाने के लिए दबाव बनाया गया जिसमें भी भ्रष्ट नुमाइंदो को सफलता नही मिली।

कचराखदान में भी नही बना वर्ष 2017 का स्वीकृत सीसी रोड

तारखेड़ी पंचायत की तरह विकास खण्ड की पंचायत के दलपुरा गाँव में भी वर्ष 2017 के माह फरवरी में स्वीकृत रोड कालू सोभान के घर से हुमसिह पांगला के घर तक 2 लाख 88 हजार का स्वीकृत हुआ मार्ग भी बाकी सड़क की तरह ये भी भ्रष्टाचारियो ने बिना पानी के मीठी गोली की तरह निगल लिया। कार्य की राशि आहरण करने के लिए दो एजेंसी 'विश्वमंगल सप्लायर रायपुरिया' और 'अजय कुमार केशवलाल मेहता सेमरोड' नाम की फर्म के तीन बिल लगाए और पूरी राशि निकाल ली, तीनो बिल से ग्राम पंचायत ने रोड निर्माण के लिए गिट्टी, रेत, सीमेंट और पानी खरीदा, वहीं रोड बनाने के लिए मजदूर, मिस्त्री, मिक्सर मशीन सहित अन्य सामग्री का उपयोग किए बिना ही रोड कागज पर बना दिया, धरातल पर रोड का नामो निशान तक नही है। दलपुरा के ग्रामीण आज भी सीसी रोड का इंतजार कर रहे हैं और कीचड़ भरी सड़क का उपयोग करने के लिए मजबूर हैं, पैसा निकाले जाने की जानकारी ग्रामीणों को भी है लेकिन सरपंच-सचिव ग्रामीणों को लगातार रोड जल्दी बनाकर देने के नाम लगभग 4 वर्षो से मूर्ख बना रहे हैं। ग्राम पंचायत में किए गए फर्जी कचराखदान ग्राम भुगतान व फर्जी बिल देने वाली एजेंसी सहित सरपंच-सचिव को स्वीकृति देने वाले उपयंत्री पर आपराधिक मामला दर्ज किया जा सकता है। लेकिन कहते हैं पूरा बाँस पोला है, अधिकारियों ने सिस्टम को अपनी रखैल बना कर रखा हुआ है और जब, जैसे, जहाँ मन करता है अपने उपयोग में लेते हैं और भ्रष्टो को बचाने के लिए फिर से वसुली कर भ्रष्टाचार करते हैं।

2017 के कार्यो की जांच के आदेश हो तो, शिवराज सरकार के सबसे बड़े घोटाले का खुलासा होगा

प्रदेश के मुख्यमंत्री भाजपा को ईमानदार सरकार होने के खोखले दावे भरते हैं, अगर सच मे शिवराज सिंह और भाजपा सरकार ईमानदारी से जनता के बीच कार्य कर रही हैं तो, वर्ष 2017 में प्रदेश भर की ग्राम पंचायतो के कार्यो की धरातल पर हुए कार्य की जांच के आदेश देना चाहिए। यदि ऐसा किया जाता है तो प्रदेश में कई भ्रष्टाचार के बड़े मामलो का सामने आना तय है, और बड़े स्तर पर हुए इस भ्रष्टाचार मे न केवल सरपंच-सचिव, रोजगार सहायक, फर्जी सप्लायर ही नही बल्कि बड़े-बड़े अधिकारी और नेता भी शामिल होंगे ये भी तय है, क्योंकि बिना अधिकारीयों ओर नेताओं की मदद से इतने बड़े स्तर पर किए गए भ्रष्टाचार होना और शिकायतो के बाद आज तक कोई कार्रवाई का नही होना इस बात को प्रमाणित करता है।

बिना गाजे-बाजे से गणपती बप्पा हुए विदा

माही की गूंज, थांदला। नगर परिषद थांदला द्वारा कोविड 19 के चलते नगर के प्रमुख चौराहा पर टेंट लगा कर भगवान गणेश की प्रतिमाओं को विसर्जन के लिए संग्रहित किया।मुख्य नगर पालिका अधिकारी अशोक चौहान ने बताया कि कोविड-19के कारण नगर में मुनादी करवा कर स्थानीय प्रशासन द्वारा नियत स्थान पर ही प्रतिमाओ को रखने की अपील की थी ।

नगर में अनंत चतुर्दशी बड़ी धूम-धाम से मनाई जाती है. इस वर्ष कोरोना के चलते गणपति महोत्सव पर बड़े जुलुस नही दिखाई दिए, सड़कों पर न तो नगाड़ों की गूंज सुनाई दी और ना ही नदियों के किनारों पर बप्पा की मूर्तियों के साथ जन सैलाब दिखा, सोशल डिस्टेंसिंग का ख्याल रखते हुए गणपति के भक्त उन्हें जोर-शोर से विदाई नहीं दे पाए। थांदला में अनेको भक्तजनों ने नदियों में भगवान गणेशजी की मूर्ति का विसर्जन किया और उनसे कोरोना के इस संकट काल को समाप्त करने की प्रार्थना की। नगर में स्थानीय प्रशासन ने मंगलवार को चाक चौबंद व्यवस्था की थी प्रातः से ही हर चौराहा पर सुरक्षा के कड़े प्रबंध किये गये थे अनुविभागीय अधिकारी जेएस बघेल, एसडीओपी मनोहर सिंह गवली, प्रभारी तहसीलदार ललिता गडरिया, नगर परिषद अध्यक्ष बंटी डामोर, मुख्य नगर पालिका अधिकारी अशोक चौहान दल-बल के साथ नगर में भ्रमण करते नजर आए। बहरहाल जो भी हो परिषद का प्रयोग आंशिक रूप से सफल रहा।

उत्कृष्ट विद्यालय ने आनलाईन कक्षा की शुरूआत की

माही की गूंज व.रो. आजाद नगर।

कोविड-19 के चलते एक ओर जहां निजी शिक्षण संस्थाएं अपनी आनलाईन कक्षा का संचालन करने में नई तकनीकी का उपयोग कर रहे, वहीं आलीराजपुर जिले के शासकीय विद्यालय भी इससे वंचित नहीं हैं। ऐसा ही उदाहरण चंद्रशेखर आजाद नगर विकासखंड के शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय के स्टाफने आनलाईन संसाधन से कक्षा शुरू कर शासकीय विद्यालयों व विद्यार्थियों के लिए अनुठी मिशाल प्रस्तुत की है।

उत्कृष्ट विद्यालय में कक्षा 9वी से 12वी के छात्र-छात्राओं के लिए विद्यालय स्तर से शुरू की गई आनलाईन कक्षा के शुभारंभ पर जिला शिक्षाधिकारी सीके शर्मा ने विद्यालय स्टाफ व आनलाईन पर जुडे विद्यार्थियों से शुभारंभ कर कही, शर्मा ने उत्कृष्ट विद्यालय के प्राचार्य व स्टाफके द्वारा किए गए सराहनीय प्रयास की प्रशंसा करते हुए कहा कि, जिले की अन्य हाईस्कूल एवं हायर सेकंडरी विद्यालय के प्राचार्य व स्टाफ को भी इस तकनीकी को समझने हेतु प्रेरित किया जाएगा, इस दौरान जिला शिक्षाधिकारी शर्मा ने आनलाईन कक्षा में शिक्षण करते हुए शिक्षक से जानकारी प्राप्त की। प्राचार्य निलेश शाह ने बताया कि, पृथक-पृथक कक्ष में 100 बच्चे एक बार में जोड़े जा सकेंगे, जिसके लिए विद्यालय शिक्षक प्रतिदिन टाईम टेबल अनुसार पढ़ाई कराएंगे, कक्षा के दौरान जो विद्यार्थी किसी कारणवश नहीं पढ पाएंगे वे रेकार्ड वीडियो लिंक से बाद में भी पढ पाएंगे।

आनलाईन कक्षा शुभारंभ अवसर पर कन्या उमावि प्राचार्य विनोद कोरी बीआरसी राजेंद्र बैरागी, बीएसी अभिषेक डावर, संस्था शिक्षक सिराजुद्दीन शेख, शाहीद शेख,रतनसिंह रावत, हेमेंद्र गुप्ता,महेंद्र गोयल, मनोज सोनी, शेखरसिंह कुशवाह,आशीष सोनी,मुकेश मंडलोई, राजकुमार मारू, लालसिंह बामनिया, शिक्षिका रंजना भावर, शिवांगनी गौड़ आदि स्टाफउपस्थित रहा।

जोबट में 10 दिनी स्वैछिक लॉकडाउन, विधायक ने किया समर्थन

माही की गूंज व.रो. आजाद नगर। अभिषेक गुप्ता

बडते कोरोना संक्रमित मरिजो के कारण जोबट सकल व्यापारी संघ व पुरे नगरवासियो की राजाबंदी के साथ स्वैछिक रूप से 2 सितम्बर से 10 सितम्बर तक जोबट में सम्पूर्ण लॉकडाउन रहेगा का निर्णय लिया गया। उक्त लॉकडाउन कोरोना की चैन तोडने में सार्थक सिद्ध होगा उक्त निर्णय की सरहना भी की जा रही है। वही जोबट विधायक सुश्री कलावती भूरिया ने स्वैछिक किए गए लॉकडाउन का समर्थन करते हुए कहा उक्त लॉकडाउन जोबट में कोरोना की चैन तोडने में सार्थक साबित होगा वही नगरवासियो को सुश्री भूरिया ने आश्वस्त किया की मैं कलेक्टर मेडम व पुलिस प्रशासन से बात कर स्वैछिक लॉकडाउन का सख्ती से पालन हो की बात करूगी।

वैश्विक स्वास्थ्यः क्या सौ साल बाद भी वहीं खड़ी है दुनिया?

आधुनिक 'राष्ट्र' राज्य की अवधारणा अपने भौगोलिक परिक्षेत्र और नागरिकों की सुरक्षा की प्रत्याभूति देती है। सामरिक सामर्थ्य हाँसिल करना प्रत्येक 'राष्ट्र' की स्वाभाविक आवश्यकता है। शीतयुद्ध के खात्मे और नई अर्थ केंद्रित विश्वव्यवस्था के आकार लेने के साथ ही दुनियां से सामरिक संघर्ष और शस्त्रों की होड़ कम नही होनी चाहिए थी? ग्लोबल इकॉनमी, विश्व ग्राम और वैश्विक आरोग्य एवं कल्याण के अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से भरी मौजूदा विश्व व्यवस्था की वास्तविक प्राथमिकताएं आखिर है क्या? पूंजीवाद और साम्यवाद के ध्रुवों के विलोपित हो जाने के बावजूद आज दुनियां पूंजीवादी राष्ट्रों के नए सुगठित और सुनियोजित बाजारवाद के चंगुल में फंसी हुई है? क्या बदलती ग्लोबल वैश्विक व्यवस्था में समानंतर रूप से सैन्य व्यय कम होकर नागरिक कल्याण सर्वोपरि प्राथमिकताओं में नहीं आने चाहिए थे। यह वर्ष हिरोशिमा और नागासाकी पर दुनिया को पहली आण्विक विभीषिका के 75 साल पूर्ण होने का भी है। इस त्रासदी के अक्स में भी देखे तो कोरोना से जूझते मानवजगत के लिए यह विचारणीय पक्ष है की हम दुनियां को किस राह पर ले जा रहे है? जिस तेजी के साथ दुनियां में हथियारों की होड़ लगी है उससे यही साबित होता है कि विज्ञान की कौशलपूर्ण निधि आज भी उसी अंधी गली में दौड़ लगा रही है जिसने हिरोशिमा और नागासाकी जैसे पीढ़ीगत जख्म मानव समाज को दिए थे।

कोरोना ने पूरी दुनियां की प्राथमिकताओं को कटघरे में लाकर खड़ा कर दिया है।कोरोना से कराहती मानवता के भावी कल्याण का बेहतर विकल्प आज समवेत रूप से हथियारों की होड़ को प्रबंधित करने का भी हो सकता है। क्योंकि ताजा अनुभव यह भी प्रमाणित करते है कि कोई भी देश अपनी पूंजी या प्रौधोगिकी के बल पर अकेले कोरोना जैसी महामारियों से नही जीत पायेगा। इस मौजूदा महामारी से निबटने में नाकाम दुनिया की स्थिति जनआरोग्य के मामले में 100 साल पुरानी ही इबारत के पुनर्वाचन जैसी लगती है। सकल मानवीय आवश्यकता और मानक स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता का संतुलन आज भी बेहद खराब दौर में है।

1918 में फैली वैश्विक इन्फ्लुएंजा महामारी से करीब 5 करोड़ लोगों की मौत हुई थी और एक तिहाई आबादी बीमार रही। आज दुनियां की आबादी 4 गुना बढ़ चुकी है और एक व्यक्ति संक्रमण वाहक के रूप में 36 घण्टे में विश्व के किसी भी कोने में पहुँच सकता है। कोविड 19 अगर काबू में नही आ सका विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि यह आंकड़ा 5 करोड़ तक जा सकता है। हार्वड ग्लोबल इंस्टिट्यूट के निदेशक डॉ आशीष झा के अनुसार अकेले भारत मे अक्टूबर 2020 तक कोरोना से मरने वालों की संख्या 1 लाख 36 हजार 536 हो सकती है। डब्लू एच ओ के 267 अलग अलग शोधकर्ताओं के अनुसार इंफेक्शन फेटेलिटी रेट यानी संक्रमण से होने वाली मौतें पूरी दुनियां में 5 करोड़ के नजदीक ही संभावित है। यानी 2020 की दुनियां उसी 1918 के दौर में खड़ी नजर आ रही है?

प्रतिष्ठित जर्नल लासेन्ट ने अमेरिका के जॉन हॉपकिन्स विश्वविद्यालय के शोध को जगह देते हुए बताया है कि करीब पांच महीने बाद दुनियां में 12 लाख बच्चे और 57 हजार माँ कोरोना के सह सबंधित प्रभावों के चलते मौत के मुँह में जा सकते है। इसी विश्वविद्यालय द्वारा जारी 'ग्लोबल हैल्थ सिक्योरिटी रपट' में बताया गया है कि पूरी दुनियां में कोविड-19 जैसी महामारी से निबटने का कोई प्रमाणिक सिस्टम मौजूदा नही है। इस रपट में कोई भी देश 100 में से 40.2 स्कोर को पार नहीं कर पाया, यानी किसी भी देश के पास वैश्विक महामारियों एवं संक्रमण से अपने नागरिकों को बचाने के लिए कोई कारगर तंत्र उपलब्ध ही नही है। अमेरिका, स्पेन, रूस, इटली जैसे मुल्कों में कोविड के कहर से जुटी नागरिकों की लाशें इस विमर्श को भी खड़ा करती है कि क्या दुनियां को 'वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा' को लेकर एक नई साझी और समावेशी नीति की ओर नहीं बढ़ना चाहिये? यह भी समझना होगा कि अमेरिका और रूस जहाँ कोरोना से सर्वाधिक मौत हुई है वे दुनिया के सबसे बड़े हथियार निर्माता और निर्यातक मुल्क है। इनके पास कुल 3750 एक्टिव परमाणु बम्बों में से 3250 का जखीरा है, और दुनियां के लगभग हर मुल्क में इन देशों की फैक्ट्रियों से निकले अस्त्र शस्त्र मौजूद है। हकीकत यह है की दुनियां में हथियारों का बाजार लोकस्वास्थ्य से आगे इसलिये महत्वहीन है क्योंकि यह अमेरिका, रूस, फ्रांस और यूरोप के एकाधिकार को बनाये हुए है। स्वीडन की स्वतंत्र संस्था 'सीपरी' के अनुसार दुनियां में हथियारों का कारोबार 1917 बिलियन डॉलर का है। इस अथाह कारोबार में 100 बड़ी कम्पनियां है जिनमें 43 अकेले अमेरिका 10 रूस और 27 यूरोपीय मुल्कों की है। अब इस कारोबार के दूसरे पक्ष को भी समझना चाहिये-भारत ने 27.86 लाख करोड़ के 2020-21 के बजट में से 3.5 लाख करोड़ की राशि रक्षा मद के लिये रखी जबकि लोकस्वास्थ्य पर 2019 में हमारा कुल खर्च 64999 करोड़ ही था। यह जीडीपी का मात्र एक फीसदी है और रक्षा पर यह आंकड़ा 2.2 फीसदी है। पाकिस्तान में स्वास्थ्य खर्च 510 और बांग्लादेश में 4866 करोड़ था। इन दोनों देशों ने डिफेंस पर 2019 में क्रमशः 53164, 27040 करोड़ खर्च किया। इन आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि दुनियाभर में हथियारों की होड़ केवल अपने नागरिकों की सीमाई मूल्कों से रक्षा के लिए नही है, असल मे यह चंद भनी मुल्कों और कारोबारी घरानों के इशारों पर नाचती वैश्विक व्यवस्था का बदनुमा पक्ष भी है। सवाल बुनियादी रूप से यही है कि विश्व मे नागरिकों की सुरक्षा हथियारों के बल पर की जाना अधिक जरूरी है या महामारियों से? यानी कोविड और ऐसे ही अवश्यंभावी संक्रमण से मानवता को बचाने के लिए वैश्विक स्वास्थ्य एजेंडा सुस्थापित करने का वक्त नहीं आ गया है? क्या जिन मुल्कों ने हथियारों के बाजार सजाए है वे इस संक्रमण से बच सके है ? वे तो गरीब मुल्कों से ज्यादा संक्रमित हुए उनके यहां लाशों के ढेर लग गए। यानी उनकी सम्पन्नता कोई काम नही आ सकी। स्पष्ट है कि आर्थिक सम्पन्नता के बावजूद कोई भी देश आज या भविष्य में कोविड जैसे अन्य खतरनाक संक्रमणों से अकेले लड़ाई नही लड़ सकता है। दुनियां भर में 10 हजार इंटरनेशनल फ्लाइट्स प्रतिदिन उड़ती है और कोरोना संक्रमण से बच सके है ? वे तो गरीब मुल्कों से ज्यादा संक्रमित हुए उनके यहां लाशों के ढेर लग गए। यानी उनकी सम्पन्नता कोई काम नही आ सकी। स्पष्ट है कि आर्थिक सम्पन्नता के बावजूद कोई भी देश आज या भविष्य में कोविड जैसे अन्य खतरनाक संक्रमणों से अकेले लड़ाई नही लड़ सकता है। दुनियां भर में 10 हजार इंटरनेशनल फ्लाइट्स प्रतिदिन उड़ती है और कोरोना संक्रमण से बच सके है ? वे तो गरीब मुल्कों से ज्यादा संक्रमित हुए उनके यहां लाशों के ढेर लग गए। यानी उनकी सम्पन्नता कोई काम नही आ सकी। स्पष्ट है कि आर्थिक सम्पन्नता के बावजूद कोई भी देश आज या भविष्य में कोविड जैसे अन्य खतरनाक संक्रमणों से अकेले लड़ाई नही लड़ सकता है। दुनियां भर में 10 हजार इंटरनेशनल फ्लाइट्स प्रतिदिन उड़ती है और कोरोना संक्रमण का रीप्रॉडक्शन नम्बर 2: 6 है जबकि 2009 में फैले स्वाइन फ्लू का यह नम्बर 1.3 था। यानी एक कोरोना पोजेटिव व्यक्ति 6 अन्य को संक्रमित कर सकता है। शोध संस्थान बायोआरकाईव्स में अपने एक अध्ययन में यह भी बताया है कि जलवायु परिवर्तन का एक खतरनाक पक्ष ग्लेशियरों के पिघलने के साथ नए वाइरस को जन्म देना भी है। अकेले तिब्बती ग्लेशियरों में 35 वायरस पाए गए जिनमे 28 पूरी तरह से नए है। जाहिर है दुनियां में वायरस अटैक की कोविड 19 जैसी संभावनाएं आने वाले वक्त में बलवती है। ऐसे में मानव जाति की रक्षा अमेरिकी या यूरोपियन ऑर्डिनेंस फैक्ट्रियां और उनके उत्पाद कर पाएंगे या ग्लोबल स्वास्थ्य सेवाएं? तथ्य यह है कि आज वैश्विक प्राथमिकताओं को नए सिरे से निर्धारित किये जाने का सबसे उपयुक्त समय आ गया है। जितना कठिन मानवता को इन संक्रमित हमलों से बचाया जाना है शायद खतरनाक आयुध का विनिर्माण और निर्यात उतना चुनौती पूर्ण नहीं है। राष्ट्रीय हित और सामरिक सुरक्षा के महत्व को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है तथापि कोविड-19 के त्रासदपूर्ण अनुभव के बाद वैश्विक प्राथमिकताओं में लोकस्वास्थ्य को सर्वोपरि रखने के लिए एक समावेशी पहल अमेरिका, रूस, फ्रांस, जर्मनी जैसे धनी मानी मुल्कों को करनी ही होगी। यह भी तथ्य है कि ऐसा किया जाना व्यवहार में बहुत आसान भी नही है लेकिन इन्ही सम्पन्न देशों का हैल्थ सिस्टम जिस तरह से कोविड के आगे लाचार नजर आया उससे आशा की जाना चाहिये कि दुनियां इस मौजूदा और आने वाले संकट की भयाभयता को समझकर मानवता के हक में आगे आने का संकल्प लेगी।

लेखक – डॉ अजय खेमरिया

भटकता युवा

मोबाइल हुआ गुम तो युवक ने कर ली आत्महत्या, परिजनों का हाल हुआ बुरा हाल

माही की गूंज, पेटलावद।

आखिर युवाओ की दशा और दिशा किस और भटक रही है ये एक विचारणीय प्रश्न बन चुका है। शहर के वार्ड क्रमांक 8 गली नबर 2 के निवासी एक युवक ने मोबाइल गुम हो जाने की बात से परेशान होकर जहरीली दवाई का सेवन कर अपनी जीवनलीला ही समाप्त कर ली। जानकारी अनुसार पेटलावद शहर के वार्ड क्रमांक 8 निवासी दीपक मनोहर परमार उम्र 21 वर्ष ने मोबाइल गुम हो जाने के बात को लेकर परेशान होकर अपनी जीवन लीला ही समाप्त कर ली है, जिसके चलते परिजनों का रो-रो कर हाल-बे-हाल हो गया है। बता दें कि, युवक के द्वारा अपने ही घर पर किसी जहरीली दवाई का सेवन कर लिया गया है जिससे उसकी मौत हो गई है। युवक की आत्महत्या करने की वजह कोई बड़ी नहीं थी सिर्फमोबाइल गुम हो जाने की बात को लेकर युवक ने मौत को गले लगा लिया है, जानकारी मृतक युवक के पिता अनुसार।

आरक्षण आर्थिक आधार पर लागू नहीं होता तब तक सरकार का विरोध जारी रहेगा- करणी सेना

उपचुनाव में दोनों पार्टियों की मुश्किलें बढ़ा सकती है करणी सेना

माही की गूंज, रतलाम। राघवेन्द्रसिंह शेखिया

आर्थिक आधार पर आरक्षण की मांग और एससी-एसटी एक्ट में संसोधन को लेकर देश भर में लगातार विरोध करती आ रहीं करणी सेना का कहना है कि, जिसको आरक्षण मिल चुका है और वो सक्षम है उसे आरक्षण की जरूरत नही, आरक्षण जातीगत आधार पर नही आर्थिक आधार पर होना चाहिए, क्योकी गरीबी, जाती देख कर नही आती। करणी सेना ने सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि, अगर सरकार ने हमारी मांगे नही मानी तो, सरकार उपचुनाव में विरोध झेलने को तैयार रहें, हम सरकार बनवा सकते तो सरकार गिरवा भी सकते है।

रतलाम जिले के गांव नवेली में शनिवार को राष्ट्रीय राजपूत करणी सेना की एक बैठक आयोजित की गई, जिसमें करणी सेना के प्रदेश अध्यक्ष जीवनसिंह शेरपुर मौजूद थे, श्री शेरपुर ने दो टूक में कहा कि, जाति देखकर किसी के यहां गरीबी नहीं आती, राज्य व केंद्र की सरकार सामान्य जाति के परिवारों को भी आरक्षण का लाभ दिलाए, उन्होंने आर्थिक आधार पर आरक्षण हो और हर एक तबके को लाभ दिए जाने की मांग की। करणी सैना के सैकड़ों कार्यकर्ता व युवाओं को संबोधित करते हुए जीवनसिंह शेरपुर ने कहा कि, देश में आरक्षण के वर्तमान मुद्दे पर समीक्षा होनी चाहिए, जो भी वंचित, पिछड़े व गरीब लोग हैं चाहे वे किसी भी जाति के हों, उन सभी को आरक्षण का लाभ मिलना चाहिए। उन्होंने केंद्र सरकार को आरक्षण के मुद्दे पर घेरते हुए कहा कि, 2014 में सबको साथ लेकर चलने की बात कही गई थी, न्यायालय ने एससी-एसटी के दुरुपयोग को रोकने की बात कही थी, केंद्र सरकार ने इस पर विधेयक लाकर सामान्य जाति को अपमानित करने का काम किया, उन्होंने कहा कि, समय रहते यदि सरकार इस मसले पर नहीं जागी तो उपचुनाव में खामियाजा भुगतना पड़ेगा। राज्य और केंद्र में बैठे स्वर्ण जाति के नेताओं को भी उन्होंने आगाह किया कि, समाज को तोड़ने वालों को जनता खारिज कर सामान्य जाति सबक सीखाना जानती है। पूरे देश में इस निर्णय के विरोध में सामान्य जाति के लोगों में गुस्सा है। लोकतंत्र में नेता नहीं जनता मालिक होती है, साथ ही आरक्षण को संविधान की नौवीं अनुसूची का अंग बनाने के लिए राष्ट्रपति को पत्र लिखकर मांग की गई है। ऐसे सांसद विधायक को गाँव मे घुसने भी मत दो और जो-जो नेता अपने गाँव मे आए उन से आप सवाल करे की आरक्षण को आर्थिक आधार पर लागू करने की जो हमारी मांग सरकार से है उस मांग का आप हमारा समर्थ करते हो या नहीं।

करणी सेना का कहना था कि, आजादी के बाद जब हमारे संविधान निर्माताओं ने आरक्षण लागू किया था, तो उस समय ये कहा गया था कि, आरक्षण सिर्फ 10 वर्ष के लिए होगा और अगर जरूरत पड़ी तो इसे आगे बढ़ाया जाएगा, लेकिन आरक्षण को ऐसी जरूरत बना दिया गया कि 70 वर्ष बाद भी इसका कोई अंत नहीं है। आरक्षण किसी पिछड़े व्यक्ति के अधिकार से ज्यादा राजनीति का हथियार बन चुका है, आरक्षण से जुड़े एक मामले पर सुप्रीम कोर्ट में कुछ समय पहले हुई एक सुनवाई से समझ सकते हैं, सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई में एक बड़ी बात कही है कि, आरक्षण किसी का मौलिक अधिकार नहीं है।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से प्रदेश अध्यक्ष जीवनसिंह शेरपुर के साथ जिला अध्यक्ष लोकेंद्रसिंह पाता खेड़ी, अंतरसिंह डोडिया, पुष्पेंद्रसिंह केरवास आदि कई करणी सैनिक मौजूद थे।

समय पर उपचार नहीं मिलने से भैंस की हो गई मौत

डॉक्टर के समय पर नही पहुंचने से नही मिल पाया उपचार

माही की गूंज, भामल।

भामल निवासी नाहरसिंह नकुम की भेस की तबीयत मंगलवार को अचानक खराब होने पर डाक्टर को सुचना देने के बाद भी समय पर पशु डाक्टर के नही आने पर भेस की मोत हो गई। नाहरसिंह नकुम ने बताया कि, मैने खवासा के पशु चिकित्सक केगुसिंग भूरिया जो खवासा में पशु चिकित्सक है, उनको सुबह 10 बजे मोबाइल पर सूचित किया पर वह पांच घंटे बाद दिन के तीन बजे आए, इतने समय लेट होने के कारण मेरी भेस मोत के मुह में समा गई, जिसका मुझे काफी दुख है। अचानक मेरी भेस बीमार हुई और डाक्टर को सूचना देने के बाद भी समय पर उपचार नही मिलने से मंगलवार को भेस की मोत हो गई। डॉक्टर की लापरवाही से ही भेस की मौत हुई जिसकी जानकारी मेरे द्वारा उच्च अधिकारीयो को भी दी गई है।

विधायक और किसान यूनियन हुए आमने-सामने, बढ़ सकता है विवाद...

झाबुआ में किसानों द्वारा अपमानित किए गए पेटलावद विधायक वालसिंह मेड़ा पर लगाए गम्भीर आरोप

माही की गूंज, पेटलावद।

पिछले दिनों पेटलावद से पदयात्रा निकाल कर झाबुआ ज्ञापन देने पहुँचे किसानों द्वारा पेटलावद विधायक वालसिंह मैड़ा के साथ किए व्यवहार से विधायक और कांग्रेस की भारी किरकिरी हुई, जिसकी भरपाई के लिए विधायक मीडिया के सामने आए। क्षेत्रिय विधायक वालसिंग मैड़ा ने सोमवार को स्थानीय पत्रकारों से चर्चा में किसान यात्रा के संयोजक महेन्द्र हामड़ के द्वारा लगाए गए आरोपो का खण्डन करते हुए बताया कि, प्रदेश सरकार से किसानों की फसलो की नुकसानी का आंकलन करवाकर मुआवजें की मांग प्रदेश सरकार से की। विधायक वालसिंग मैड़ा ने अपनी बात रखते हुए पत्रकारों को बताया कि, रामगढ़ से प्रारंभ हुई किसान यात्रा के स्वागत के लिए स्वयं यात्रा के संयोजक व किसान युनियन के जिलाध्यक्ष महेन्द्र हामड़ ने कांग्रेस पार्टी को सुचना दी थी, जिस पर ब्लॉक कांग्रेस कमेटी द्वारा स्थानीय श्रद्धांजली चौक पर यात्रा का स्वागत किया गया, यात्रा के मार्ग में व्यवस्थाओं के संबंध में कोई चर्चा नहीं हुई थी। किसान संघ स्वतंत्र बेनर है, अपने कार्यक्रमों और व्यवस्थाओं की जिम्मेदारी स्वयं किसान युनियन की है न कि कांग्रेस पार्टी या विधायक की, इसके बावजुद भी किसानों की समस्या होने के कारण राजनिति से उपर उठकर किसानों के लिए ज्ञापन देने और कलेक्टर से चर्चा के लिए झाबुआ पहुंचे थे और स्वंय किसान युनियन के लोग लगातार मेरे सम्पर्क में थे।

हामड़ पर ली चुटकी... भोजन व्यवस्था नही की इसलिए भड़काया किसानों को

इस पुरे मामले में विधायक वालसिंग मैड़ा ने चुटकी लेते हुए बताया कि, जब किसान युनियन किसी राजनितिक दल से संबंध नहीं रखना चाहती तो यात्रा की व्यवस्था और भोजन की व्यवस्था विधायक या कांग्रेस पार्टी से करवाना अपने आपमें विचारणिय है, फिर भी मेघनगर में यात्रियों के रूकने के लिए व्यवस्था हेतू कार्यकर्ताओं को निर्देश दिए थे। वहीं महेन्द्र हामड़ पर किसानों के नाम पर राजनिति करने के आरोप लगाते हुए विधायक ने कहा कि, एक जनप्रतिनिधी का सार्वजनिक रूप से महेन्द्र हामड़ द्वारा अपमान किया गया है। ज्ञापन देने के लिए मुझे बुलाकर लोगो के सामने विरोध की गंदी राजनिति कांग्रेस पार्टी सहन नहीं करेंगी। सिर्फझुठी वाहवाहीं लुटने के लिए मिड़िया के सामने महेन्द्र हामड़ ने नोटंकी की है। विधायक ने खुद को किसान का बेटा बताते हुए किसानों की समस्या और दर्द को भलीभांति महसुस करने और फसलों का नुकसान होने पर किसानों के हर सुख-दुख में साथ खड़ा रहने का आश्वासन भी विधायक मैड़ा ने देते हुए बताया कि, क्षेत्र के किसानों की लड़ाई पेटलावद से लेकर विधानसभा तक उठाना मेरी जिम्मेदारी है और प्रदेश सरकार से किसानों को जल्द ही मुआवजा दिलवाने के हर संभव प्रयास किए जाएगे।

प्रेसवार्ता लेते विधायक वालसिंह मैड़ा।

किसान यूनियन करेगा पलटवार

पूरे मामले के बाद अब अलग बखेड़ा खड़ा हो गया है, जिसके चलते किसान यूनियन ओर विधायक आमने-सामने हो गए है, विधायक मैड़ा द्वारा प्रेसवार्ता आयोजित कर लगाए गए आरोपो के बाद किसान संघ की आड़ में विधायक के विरुद्ध मोर्चा खोलने की बात कर रहे हैं, वही भविष्य में मामले में राजनीतिक होना भी तय है। विधायक के द्वारा किसानों की भोजन व्यवस्था को लेकर ली गई चुटकी को भाजपा नेता सोशल मीडिया पर पोस्ट कर मजे ले रहे हैं, ये तय है की भविष्य में ये मामला और बढ़ेगा जो कांग्रेस और विधायक के लिए परेशानी का सबब बन सकता है, वही पूरे मामले में किसान यूनियन के महेंद्र हामड की भी भारी किरकिरी हुई है।

जाति प्रमाण-पत्र के लिए परेशान होते ग्रामीण, पुरानी नकल के लिए समय और पैसा कर रहे बर्बाद

पूर्व एसडीएम के आदेश से लटक गए जाति प्रमाण-पत्र

माही की गूंज, पेटलावद।

स्कूल, चुनाव, नोकरी सहित कई जरूरी कार्यो में उपयोग में आने वाले जाति प्रमाण-पत्र के लिए पेटलावद विकासखण्ड के ग्रामीणों की भारी फजियत हो गई है, जिससे ग्रामीणों का पैसो के साथ समय भी बर्बाद हो रहा है। गरीब और किसान हितेषी सरकार एक हाथ लोगो को कोरोना संकट से उभारने की बात कर रही तो दूसरे हाथ सरकार की प्रशानिक व्यवस्था ने गरीबो से कागज के नाम पर लूट मचा कर आर्थिक नुकसान पहुँचा रही हैं।

जाति प्रमाण-पत्र के लिए 1950 से 1984 तक का मांगा जा रहा है पुराना रिकार्ड

जाति प्रमाण-पत्र के लिए शासन ने गाइडलाईन कर आवेंदन फर्म जारी कर रखा है, जिसमें पटवारी, राजस्व निरक्षिक, पंचायत, स्कूल, पंच, कोटवार, समाज प्रमुख सहित आवेदक का शपथ-पत्र को भरकर जरूरी दस्तावेज राशनकार्ड, परिवार आईडी, अंकसूची, खाता नकल आदि पेश करना होती है, जिसकी जांच तहसीलदार द्वारा करने के बाद आवेदन की समस्त दस्तावेजी खानापूर्ति कर अनुविभागीय अधिकारी की ओर भेजा जाता है, जहां से दोबारा जाँच के बाद प्रमाण-पत्र जारी किया जाता है। उक्त आवेदन में समस्त दस्तावेजो के साथ पूर्व में वर्तमान की खाता नकल या कृषि भूमि की पावती या भवन प्रमाण-पत्र की छायाप्रति लगाई जाती थी, लेकिन पूर्व एसडीएम एलएन गर्ग द्वारा वर्तमान की खाता नकल के स्थान पर आवेदन के साथ पुराना रिकार्ड होने पर ही आवेदन स्वीकार करने के आदेश जारी कर दिए थे, जिसके लिए अब विकासखण्ड के ग्रामीणों को अब समय बर्बादी के साथ पैसा खर्च करना पड़ रहा है।

3 सौ से 4 सौ का खर्च ओर दो-तीन दिन की भागदौड़

चुंकी आवेदन के साथ लगने वाले पटवारी प्रतिवेदन में स्पष्ट दर्शाया गया है कि, आवेंदक दिनांक 09-1950/ 26.12.1984 वर्ष से ग्राम में निवास करते आरहे है, मतलब पटवारी को उक्त अपनी रिपोर्ट और पंचनामे में आवेदक की सम्पूर्ण रिकॉर्ड की जाँच कर भरना होता हैं कि, वो शासकीय नियमों अनुसार बताए गए स्थान का निवासी हैं या नही, बावजूद इसकी पुराने रिकॉर्ड के लिए जबरन नियम लोगो पर लाद दिया गया, जिसके लिए ग्रामीणों को विधिवत नाजिर शाखा में पुरानी नकल के लिए पांच रुपए का टिकिट लगाकर आवेदन करना पड़ता है, जहां नकल के लिए 100 से 150 रुपए लिए जाते है और एक-दो दिन में नकल के लिए वापस बुलाया जाता है। उक्त नकल आवेदन नकल शाखा में जाता है, जहां से पुराने रिकार्ड की फोटो कॉपी करवा कर नाजिर शाखा में भेजी जाती हैं, जहा से प्रमाणित कर नकल दी जाती है जिसके लिए ग्रामीण से 150 से 200 रुपए वसूले जाते है जिसकी कोई रसीद तक नही दी जाती है। काम करवाने के चक्कर मे ग्रामीण, सेवा शुल्क के नाम पर ये राशि चुका भी देता हैं।

जाति प्रमाण-पत्र बनवाने में एक व्यक्ति का आवेंदन और फोटोकॉपी सहित 3 सौ से 4 सौ रुपए का खर्च और गाँव से पेटलावद तहसील न्यायालय में आने का खर्च, जबकि वर्तमान में कोरोना संकट के चलते वाहन सुविधा तक नही है, दो से तीन बार निजी साधन से पेटलावद आना-जाना पड़ रहा है, विकासखण्ड के कई गांव तो 30 से 40 किलोमीटर तक कि दूरी पर भी बसे हैं।

कई आवेदन हो चुके है निरस्त, मामूली सुधार के लिए फिर से होती है प्रक्रिया

पूर्व एसडीएम एलएन गर्ग के इस फरमान के कारण पहले से आवेदन कर चुके कई आवेदन पुराने रिकॉर्ड की कमी बताकर निरस्त कर दिए गए, जिसके लिए अब जाति प्रमाण-पत्र के लिए पुनः आवेदन करना पड़ता है और सभी जरूरी कार्रवाई फिर से करनी पड़ती हैं, जिसके लिए फिर से बड़ा खर्च करना पड़ता है। वही प्रमाण-पत्र जारी होने के बाद कई बार मामूली गलतियां कम्प्यूटर ऑपरेटर या आवेदक से हो जाती है जिसमे नाम, उपनाम, गाँव, जाति में गलती हो जाती है, जिसे सुधारने के लिए प्रमाण-पत्र की पूरी प्रक्रिया फिर से कराई जाती है जो खर्चीली और समय बर्बादी वाली होती है।

नए एसडीएम को करवाया जा चुका है समस्या से अवगत

पूरे मामले में नवागत एसडीएम शिशिर गेमावत को पत्रकारो ने प्रथम मुकालत के दौरान विकासखण्ड के ग्रामीणों को हो रही इस समस्या और फिजूल खर्जी बचाने के लिए अवगत कराया गया था, जिसे प्राथमिकता के साथ देखकर हल करने की बात की गई थी, लेकिन ग्रामीण आज भी उसी दिशा में परेशानी उठाने पर मजबूर है, जबकि पटवारी रिपोर्ट ओर पंचनामा में पटवारी आवेदक के शासकीय नियमानुसार रिकॉर्ड देखकर उसके स्थाई निवासी होने की पुष्टि विशेष टीप लिखकर कर सकते और गरीब आदिवासी सहित समस्त जाति प्रमाण-पत्र के आवेदको को इस परेशानी और फिजूल खर्चे से बचाया जा सकता है जिस और जिम्मेदार कोई ध्यान नही दे रहे है, जिससे गरिब व आम लोग लूट का शिकार हो रहे हैं।

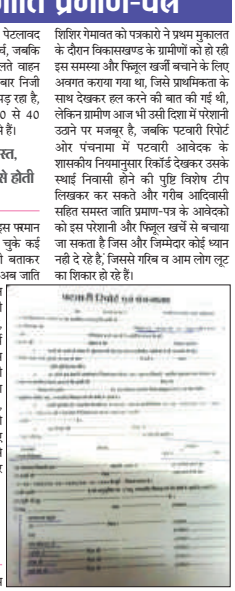

मन को मोह रही हैं झकनावदा सिंघेश्वर धाम की खूबसूरत छटाएं

पानी में डूब चुका पुराना मंदिर, दर्शन के लिए बड़ी संख्या में पहुँच रहे हैं श्रद्धालु

माही मधु कन्या तट पर प्रसिद्ध प्राचीन श्री कृपेशवर धाम पुराना मंदिर जल मग्न।

माही की गूंज झकनावदा। आंनद सोलंकी

झाबुआ जिले मे ग्राम झकनावदा के पास पहाड़ियों की ओट में स्थापित सिंघेश्वरधाम इन दिनों आकर्षक का केंद्र बना हुआ है। यहाँ मधुकन्या नदी एवं माही नदी के समागम स्थल श्री सिंघेश्वर धाम पर भगवान महांकाल का स्थान एवं श्री 1008 काशीगिरी जी महाराज की तपोस्थली श्री सिंघेश्वर धाम का अनुपम दृश्य श्रद्धालुओं को देखते ही आकर्षित करता है।

श्री 1008 काशीगिरी जी महाराज के बाद गादीपति श्री 1008 रामेश्वर गिरी जी महाराज के सानिध्य में सिंघेश्वर धाम को एक नया रूप मिल रहा है, श्रद्धालुओं का आकर्षण देखते ही लुभावना लगता है। बताया जाता है कि, इस स्थान पर माही के जल से स्नान करने पर सारे रोगों से मुक्ति मिलती है। इस स्थान पर निर्माण कार्य श्रद्धालुओं के सहयोग से एवं समिति के अर्थक प्रयासों के द्वारा श्री सिंघेश्वर धाम की कायाकल्प का रूप प्रगति पर चल रहा है। गुरु पूर्णिमा व अन्य शुभ अवसर पर श्री सिंघेश्वर धाम पर भक्तों की भीड़ गुरूदेव रामेश्वर गिरी जी महाराज के दर्शन एवं आशीर्वाद के लिए उमड़ पड़ती है। इस बार देर से हुई बारिश के बाद पहली बार सिंघेश्वर धाम का पुराना मंदिर पूरी तरह से जलमग्न हो चुका है। बारिश के बाद घाट पर बने नए मंदिर स्थल के चारो ओर हरियाली की चादर छाई हुई है, जिसे देखने ओर सिंघेश्वर धाम दर्शन और घूमने के लिए श्रद्धालु समय निकालकर पर पहुँच रहे हैं। इस स्थान की महिमा झाबुआ जिले के अलावा दूरदराज क्षेत्रों मे फैली हुई है, जिससे यहाँ पर बहार से भी श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुँचते है। धाम से विशेष रूप जुड़े झकनावदा के महेंद्र गाठौर बताते है, सिंघेश्वर धाम पर भक्तो की सुविधा के लिए लगातार निर्माण कार्य चलाए जा रहे हैं ओर पूरे मंदिर क्षेत्र को सजाया जा रहा, जिसमे बगीचे, बैठक हाल, धर्मशाला, भोजन शाला का कार्य प्रगति पर चल रहा है, उक्त स्थान का ऐसा कायाकल्प किया जा रहा है कि सिंघेश्वर धाम को जिले का सबसे स्मणीय स्थल बनाया जा सके।

मंदिर का नया कायाकल्प कर स्मणिंय धाम बनाने का किया जा रहा कार्य।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा, संपादक- धर्मेन्द्र पंचाल । मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422